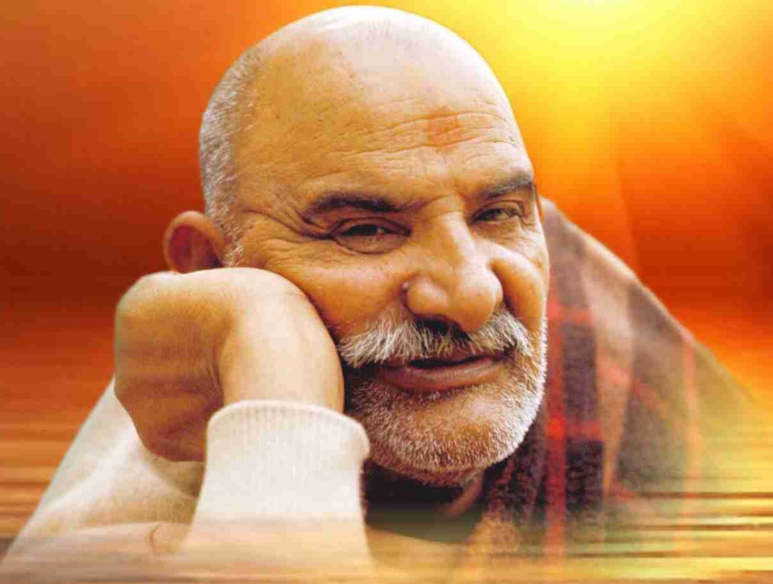
नीम करौली के बाबा

(तकदीर बदलने वाले बाबा)

Baba Neem Karoli



— डॉ. राजेश अग्रवाल

नीम करौली के बाबा

(तकदीर बदलने वाले बाबा)

Baba Neem Karoli

संकलन–संपादन

डॉ. राजेश अग्रवाल

(Associate Professor, Computer Engg. Deptt.)

एन. आई. टी., कुरुक्षेत्र

E-mail:-rkavishwamitra@gmail.com

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रथम संस्करण: मकर सक्रान्ति 2016

मूल्य: ₹10

आवृति: 2000 प्रतियाँ

प्रकाशक: विश्वामित्र विचार मंच

पूछताछ (Enquiry):

पुस्तक प्राप्ति के लिए अथवा अन्य किसी भी जानकारी हेतु

सम्पर्क करें: विशाल (Vishal) Mobile: 9354761220

1. **हरिद्वार**

डूालिया पुस्तक भण्डार

भारत माता मन्दिर, हरिद्वार

मोबाईल:- 09837300687

2. **उत्तर प्रदेश**

श्री नीरज अग्रवाल,

66,विष्णु धाम कालोनी

(प्रज्ञा चौक)

न्यू माधव नगर, सहारनपुर

(0132-2663832)

3. **पश्चिम बंगाल**

गायत्री शक्तिपीठ, जयगांव

निकट- न्यु जलपाईगुड़ी

मोबाईल:- 09233563171

4. **नोएडा**

श्री मती पुष्पलता (माताजी)

B-43, Sector-39

Noida (U.P.)

Phone: 09818298812

पुस्तक की Soft-Copy (PDF) निम्न Blogs पर उपलब्ध हैं-

vishwamitra-spiritualrevolution.blogspot.in

vishwamitra-spiritualtransformation.blogspot.in

जिन चरणों का पर्श प्राप्त कर, जड़ में प्रकटे अतिमन चेतन।
खुले चेतना नील गगन में, करती मानस-सीमा-लंघन॥
जिनकी स्वर्णिम छाया में पल, श्वेत बना काजल सा जीवन।
उसका पुष्पण आज सजा कर, उन चरणों में करता अर्पण॥

अनुक्रमिका (INDEX)

भारत के महान योगी

भारतीय संस्कृति ने नीम करौली के बाबा को हनुमान जी के अवतार के रूप में स्वीकार किया है। उनके बारे में ऐसा कहा जाता है कि वो कहीं भी कभी भी अपने भक्तों के आवहान् पर प्रकट हो जाते हैं व उनका संकट निवारण करते हैं। कुछ लोगों के मन में यह संदेह उठेगा कि ऐसा किस प्रकार सम्भव हो सकता है। परन्तु भारत के महायोगियों के शब्द कोष में असम्भव जैसा कुछ भी नहीं है ऐसे अनेकों प्रमाण देखने को मिलते हैं।

एक बार की बात है एक अमेरिकी कर्नल अल्काट के मकान में एक दिन कोई भारतीय महापुरुष सहसा प्रकट हुए। उन्होंने अल्काट को भारत आने का निमंत्रण दिया एवं अध्यात्मिक उपदेश दिए। उनके आगमन को कोई स्वप्न व मानसिक भ्रम न समझा जाए इसे प्रमाणित करने के लिए उन्होंने अपनी पगड़ी उतार कर अल्काट के हाथ पर रख दी ताकि उन्हें यह विश्वास हो जाए कि वो एक जीवित भारतीय व्यक्ति हैं। इसके बाद वो महापुरुष वहाँ से अचानक गायब हो गए।

यह समाचार अमेरिकी समाचार पत्रों में छपा व इस घटना के पश्चात् कर्नल लम्बी यात्रा कर भारत आए व उन दिव्य महापुरुष की खोज में इधर-उधर भटकते रहे। बाद में वे महापुरुष उन्हें हिमालय की

पहाड़ी पर मिले तथा उनको साधना के पथ पर अग्रसर किया। भारतीय ऋषियों और योगियों की आलौकिक क्षमता के बारे में सुनकर हमारे हृदय में श्रद्धा भक्ति और विश्वास की धारा बहने लगे यही इस पुस्तिका के लेखन का उद्देश्य है।

सतत ब्रह्मअभ्यास से मनविक्षेप को नाश।
ज्ञान दृढ़ निर्वासना जीव मुक्ति प्रतिभास॥

चाह गई चिन्ता गई, मनुआ बेपरवाह।
जिस मन में संतोष है, वह है शंहशाह॥

क्या इस प्रारब्ध कर्म से हमारा परित्राण सम्भव नहीं है बाबा ?

प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्मफल भोगना ही होगा। किन्तु कड़ी धूप में जैसे कोई राही छाता के द्वारा सहूलियत प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार यदि कोई मनुष्य भगवान के चरण में छाया का आश्रय ले तो कठोर प्रारब्ध की तीव्रता कुछ कम हो जाती है।

अनन्तसंसारसमुद्रतारं, नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम्।
वैराग्यसाम्राज्यद्पूजनाभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥1॥
कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां, दौर्भाग्यदावाम्बुदमालिकाभ्याम्।
दूरीकृतानम्रविपत्तिताभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥2॥

बाबा नीम करौली – एक परिचय

आगरा के पास फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश के गाँव अकबरपुर में जन्मे लक्ष्मी नारायण शर्मा फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश के गाँव नीम करौली में कठिन तप करके स्वयं ही बाबा नीम करौली बन गए। उनकी अलौकिक शक्तियाँ पूरे देश में, यहाँ तक की विश्व में इतनी अधिक प्रकाशित हुई कि उनका नाम किसी से अनजान न रह गया। पं॰ गोविंद वल्लभ पंत, डॉ॰ संपूर्णानन्द, राष्ट्रपति वी॰वी॰ गिरि, उपराष्ट्रपति गोपाल स्वरूप पाठक, राज्यपाल व केंद्रीय मंत्री रहे के॰ एम॰ मुंशी, जुगल किशोर बिड़ला, महाकवि सुमित्रानंदन पंत, अंग्रेज जनरल मकन्ना, देश के पहले प्रधानमंत्री पं॰ जवाहर लाल नेहरू और भी ऐसे अनेक लोग बाबा के दर्शन के लिए आते रहते थे। बाबा राजा–रंक, अमीर–गरीब, सभी का समान रूप से पीड़ा–निवारण करते थे। उनके उपदेश लोगों को पतन से उबारते और सन्मार्ग पर, सत्पथ पर चलाते।

बाबा के दर्शनों के लिए साधारण गाँव के लोगों से लेकर शहरी लोगों, बड़े अफसरों, राजनेताओं का ताँता लगा रहता था, लेकिन बाबा बड़े ही अलमस्त, मनमौजी और भाव प्रिय थे। कोई उन्हें भाव से याद करे तो अनायास ही बिना बुलाए उसके घर पहुँच जाते और यदि किसी के भाव में कमी रह जाए तो बड़े से बड़े व्यक्तित्व से भी न मिले। एक बार वह गुलजारी लाल नंदा, जो उस समय देश की

राजनीति में अतिविशिष्ट माने जाते थे, उनसे भी न मिले थे। यद्यपि नंदा जी बड़े धार्मिक भी थे व राजनीति में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त थे, परन्तु न मालूम बाबा को क्या बात बुरी लगी। बहुत चाहने पर भी नंदा जी को मायूस होकर वापिस लौटना पड़ा। बाबा अक्सर एक कम्बल ओढ़ कर रखते थे। किसी–किसी से बड़े प्रेम से लम्बे समय तक बात करते थे और किसी–किसी को देखकर कम्बल में मुँह छिपा लेते थे।

बाबा नीम करौली ने देश के अनेक स्थानों पर हनुमान मंदिर बनाए। इन हनुमान मंदिरों की शृंखला में उन्होंने एक मंदिर कानपुर में भी बनाया, जो पनकी में स्थित है। बाबा द्वारा बनाए गए हनुमान मंदिरों की विलक्षणता से सर्वजन परिचित हैं। कॉपी पर राम–नाम लिखना उन्हें प्रिय था। वह कहा करते थे, खाली नहीं करोगे, तो भरेगा कैसे? सूर्य ने क्या कभी अंधकार देखा है? यह हमारे जीवन में संकीर्ण मनोवृत्तियों की कालिमा है, जो हमें कमी की अनुभूति कराती है, अन्यथा उस पूर्ण के दरबार में कमी कहाँ! वह सबको बताया करते थे कि भगवान अपनी प्रकृति में पूर्ण रूप से विद्यमान हैं। वे सर्वत्र हैं और कभी भी हमारी आँखों से ओझल नहीं होते। यदि हम उन्हें नहीं देख सकते तो दोष हमारा है। हम भेद–दृष्टि से काम लेते हैं। हमारी संकीर्ण मनोवृत्तियाँ हमें इस प्रकार उलझाए रहती हैं कि हम उन्हें भूल जाते हैं।

अभी भी वह ऐसी कुछ बातें भक्तों को बता रहे थे। उनकी बातें एक पंडित बड़ी ध्यान से सुन रहे थे, उनके मन में आध्यात्मिक साधना के लिए मार्गदर्शन पाने की कसक जाग उठी, लेकिन यह बात बाबा से कहने की हिम्मत नहीं हो रही थी। अंतर्यामी बाबा उनके मन के भाव जान गए और सामने खड़े लोगों से बोले– "अरे भाई! तुम लोग जरा उस पीछे खड़े पंडित जी को हमारे पास आने दो।" बाबा की बात सुनकर लोगों ने उन्हें आगे आने दिया। सामने आने पर बाबा उनसे बोले– "पं० जगदेव प्रसाद तिवारी नाम है न तुम्हारा?" "हाँ" बस, एक शब्द कहा उन्होंने। "तुम गायत्री जप करते हो न?" इस सवाल का उत्तर भी उन्होंने अपनी संक्षिप्त 'हाँ' से दिया। तब बाबा ने फिर उनसे पूछा "अखण्ड–ज्योति पत्रिका भी तो पढ़ते हो?" अबकी बार वह थोड़ा अचरज में पड़े और बोले– "हाँ बाबा"।

इस पर बाबा नीम करौली ने कहा– "तुम गायत्री मंत्र का जप करते हो, अखण्ड–ज्योति भी पढ़ते हो, फिर कमी क्या है?" फिर उन्होंने स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर दिया – "कमी यह है कि तुम जो करते हो, उसके महत्त्व से परिचित नहीं हो। जो करते हो उसके महत्त्व को भी समझो। गायत्री ब्रह्मविद्या का मंत्र है। जो इसे श्रद्धा व मनोयोगपूर्वक करता है, उसे किसी अन्य साधना की जरूरत नहीं है। गायत्री–साधना यदि निरंतर होती रहे, तो आगे के रास्ते स्वयं खुलते हैं।

अंतर्यात्रा का पथ स्वयं प्रकाशित होता है। इसलिए जो कर रहे हो, उसे करते चले जाओ। अविराम, निर्बाध, श्रद्धा-भाव से, दीर्घ काल तक, फिर तुम देखोगे कि सब कुछ स्वयं प्रकट हो जाएगा।" नीम करौली महाराज जब ये बातें बता रहे थे, तब बीच में पं० जगदेव प्रसाद तिवारी ने अपनी शंका जाहिर करते हुए कहा- " मन में किसी संत का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन पाने की चाहत होती है।"

इस बात पर बाबा बोले- "आध्यात्मिक साधनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए तेरे पास अखण्ड-ज्योति है न, उसके लेखों से प्रकाश प्रवाहित होता है, उसी से तेरा कल्याण होगा। ब्राह्मण हो, साधना करते हो, फिर भी अखण्ड-ज्योति की महिमा से अनजान हो। अरे! सच को जानो, देखो मैं किसका नाम अपनी कॉपी में लिखता हूँ।" यह कहते हुए बाबा ने अपनी कॉपी उन्हें दिखाई, उस कॉपी में राम-राम-राम यही लिखा था। इतना कहकर उनसे वह धीरे से बोले- "जिनका नाम इस कॉपी में मैं लिखा करता हूँ, वहीं स्वयं अखण्ड-ज्योति लिखते हैं। अगर वह स्वयं को इतना छिपाकर न रखें तो लोग उनकी चरणधूलि को ताबीज बनाकर पहनने लग जाएँगे, फिर उनका धरती पर रहकर काम करना कठिन हो जाएगा। तुम साधना करते हो, इसलिए मैंने तुमको सच्चाई बता दी। अखण्ड-ज्योति के प्रति श्रद्धा ही तुम्हारी चेतना को उनसे जोड़ देगी, फिर सब कुछ स्वतः

मिलता रहेगा। मैं जो कह रहा हूँ, उसे स्वीकारोगे तो अखण्ड–ज्योति का जीवन दर्शन तुम्हें स्वयं जीवन के सत्य स्वरूप का दर्शन करा देगा।"

एक बार की बात है कि गया में नीम करौली वाले बाबा का आचार्य श्रीराम जी से मिलना हुआ। बाबा ने आचार्य जी को कहा कि आप को धरती पर आने की क्या आवश्यकता आन पड़ी? इस पर आचार्य जी ने उत्तर दिया कि उन्हें महावतार बाबा जी के द्वारा युग परिवर्तन के उद्देश्य से धरती पर भेजा गया है वो अपनी इच्छा से नहीं आए। उच्च स्तर के महापुरुष धरती पर उज्ज्वल भविष्य लाने के लिए सदा संकल्पित रहते हैं व परस्पर योजनाएँ बनाते हैं।

नीम करौली बाबा का चमत्कारी व्यक्तित्व

फर्रूखाबाद का रेलवे स्टेशन। एक गाड़ी खड़ी थी। लोग गाड़ी पर चढ़–उतर रहे थे। इन्हीं यात्रियों में कम्बल लपेटे एक बाबा प्रथम श्रेणी के डिब्बे में सवार हो गए। अगले स्टेशन पर एक एंग्लो इंडियन टिकट चेकर आया। प्रथम श्रेणी के डिब्बे में एक साधु को देखकर वह क्रोध से जल उठा। वह यह जानता था कि भारत के अधिकांश साधु बिना टिकट रेल में सफर करते हैं। उसने ऐसे अनेक साधुओं को पकड़ा था। लेकिन इस साधु की क्या मजाल जो प्रथम श्रेणी में आकर बैठ गया?

ब्रिटिश शासन काल था। टिकट है या नहीं, बिना पूछे अगले स्टेशन पर उसने बाबा को डिब्बे से बाहर निकाल दिया। बिना प्रतिवाद किए बाबाजी चुपचाप गाड़ी से उतरकर स्टेशन के एक बेंच पर बैठ गए। गाड़ी छूटने का समय हो गया जानकर स्टेशन के कर्मचारी ने घण्टी बजाई। गार्ड ने हरी झण्डी दिखाई। इंजन की सीटी बज उठी। लेकिन गाड़ी अपनी जगह से नहीं हिली। ड्राईवर-खलासी गाड़ी और इंजन की जाँच करने लगे। गाड़ी के न छूटने पर स्टेशन के कर्मचारी और गार्ड आकर ड्राईवर से कारण पूछने लगे। ड्राईवर ने कहा-" इंजन में कोई खराबी नहीं है। पूरी गाड़ी चैक कर चुका। माजरा क्या है, समझ में नहीं आ रहा है?" धीरे-धीरे दो घण्टे बीत गए। गाड़ी जहाँ की तहाँ खड़ी रही। सभी लोग परेशान थे। यात्रियों में एक युवक ने विनोद के रूप में बाबाजी से कहा - "बाबा, कोई मंतर-वंतर फूँकिए गाड़ी चले। सभी परेशान हो रहे हैं।" बाबा ने कहा - "तो हम क्या करें। एक तो हमें गाड़ी से उतार दिया और दूसरे हमसे गाड़ी चलाने के लिए मंतर फूँकने को कह रहे हो।" बाबा की शिकायत सुनने पर उस युवक ने कहा - "आपके पास टिकट नहीं होगा।"

बाबा ने तुरन्त एक नहीं, कई टिकट प्रथम श्रेणी के दिखाए। यह देखकर उपस्थित सभी लोगों को विस्मय हुआ। टिकट रहते क्यों मुसाफिर को उतारा गया? क्या फर्स्ट क्लास में केवल अंग्रेज ही सफर

कर सकते हैं? ब्रजभूमि में संतों को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। लोग उस चैकर को खोजने लगे। जिसने बाबा को उतार दिया था।

लोगों में उत्तेजना फैलते देख उक्त टिकट चैकर स्टेशन मास्टर के कमरे में जाकर बैठ गया। इसके बाद कुछ लोगों ने आदर के साथ बाबा को डिब्बे के भीतर बिठाया। बाहर खड़े किसी व्यक्ति ने कहा – "बाबा, अब तो गाड़ी चलाईए। बाबा ने गाड़ी को थपथपाते हुए कहा – "चल भाई।" इतना कहना था कि बिना सीटी के गाड़ी चल पड़ी। अब लोगों को समझते देर नहीं लगी कि बाबाजी के कारण ही गाड़ी रुकी हुई थी। इस घटना का प्रचार इस क्षेत्र में तेजी से हो गया। अगले स्टेशन पर बाबा उतरे जिनका नाम था –नीम करौली।

कहा जाता है कि आप बचपन से ही सिद्ध थे। मित्रों तथा पड़ोसियों को भविष्य की सूचनाएँ देते थे। आगे चलकर वैसी घटनाएँ हो जाती थी। एक बार आपने अपने घर के लोगों से कहा कि आज रात डाका पड़ेगा। बालक समझकर किसी ने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया, पर आपकी भविष्यवाणी सत्य हुई। उस रात को डाका पड़ा था।

अल्पायु में ही अज्ञात प्रेरणावश आप घर से भाग गए। गुजरात के बबानियाँ गाँव में आकर रहने लगे। यह गाँव मोरवी से 50 मील दूर है। यहाँ वैष्णवी का एक प्राचीन आश्रम है। यहीं आप साधन–पूजन करने लगे। बाद में रमाबाई के आश्रम में चले आए।

संतों में एक परम्परा है। वे अपने शिष्यों को उचित समय पर बुलाकर दीक्षा देते हैं। लक्ष्मी नारायण को उनके गुरु ने आकर्षित किया और समय पर दीक्षा दी। दीक्षा के पश्चात् उनका नाम हुआ–लक्ष्मणदास वैरागी। बाबा लक्ष्मणदास में कुछ खुबियाँ थी। वे बाह्य आडम्बर नहीं करते थे। रंगीन वस्त्र पहनना, जटा–दाढ़ी रखना, त्रिपुण्ड लगाना, माला जपना, शिष्य बनाकर दीक्षा देना या भक्तों को उपदेश देना आदि कार्य नहीं करते थे। शरीर पर केवल धोती रखते थे। आगे चलकर कम्बल ओढ़ने लगे। बबानियाँ गाँव में बाबा लगभग सन् 1904–05 में आए थे। स्थानीय लोगों की मदद से यहाँ स्थित तालाब के किनारे हनुमान जी का एक मन्दिर बनवाया था। बबानियाँ में आप सात वर्ष तक तपस्या करने के बाद तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़े। विभिन्न तीर्थों का दर्शन करते हुए आप नीम करौली गाँव में आए।

नीम करौली के ग्रामवासियों ने आपको सादर अपनाया। निश्छल ग्रामवासियों की आत्मीयता और मधुर व्यवहार ने आपको स्नेह–पाश में बाँध लिया। यहाँ के लोग आपके योगैश्वर्य से प्रभावित हो गए। इन लोगों ने साधना करने के लिए जमीन के भीतर एक गुफा बना दी। अगली बरसात के मौसम में जब गुफा नष्ट हो गई तब पुनः ऊँचे स्थान पर दूसरी गुफा का निर्माण किया गया। आप दिन भर गुफा में साधना करते थे। शाम के समय गाँव के लोगों से मिलते थे।

नीम करौली गाँव ब्रज का पिछड़ा इलाका था। यहाँ एक भी मन्दिर नहीं था। बाबा ने निश्चय किया कि हनुमानजी का मन्दिर बनवाऊँगा। इस गाँव में एक अर्से से रहने के कारण यहाँ के लोगों की स्थिति के बारे में जानकारी उन्हें थी। गाँव के एक समृद्ध बनिये से उन्होंने कहा कि हनुमानजी का मन्दिर बनवा दे। वह राजी हो गया। निश्चित स्थान पर ईंट–पत्थर गिर गए। इसके बाद उसने हाथ खींच लिए। बाबा समझ गए कि अब उसकी दिलचस्पी समाप्त हो गई है।

कई दिनों बाद सहसा दुकान में आग लग गई। गाँव में आग बुझाने का कोई साधन नहीं था। बाबा की योग–शक्ति से बनिया परिचित था। वह दौड़ा हुआ बाबा के पास आया। उनसे प्रार्थना करने लगा। बाबा ने कहा – "तूने हनुमान जी का मन्दिर बनवाने का वायदा किया, बाद में मुकर गया। जा, उनसे क्षमा माँग और मन्दिर बनवा दे।"

"जा, जा हनुमान मन्दिर में जा। उनसे प्रार्थना करने पर सब ठीक हो जाएगा।" वह तुरन्त हनुमान जी के विग्रह के पास आकर प्रार्थना करने लगा। थोड़ी देर बाद दुकान के नौकर ने आकर कहा – "मालिक, दुकान की आग अपने आप बुझ गई। सिर्फ मिर्च के दो बोरे थोड़े से जल गए हैं।"

इस घटना के बाद बनिये ने गाँव में हनुमानजी का मन्दिर बनवा दिया और हवन–कुण्ड भी बन गया। बाबा ने देखा – मन्दिर के

आसपास कुआँ नहीं है। इस कार्य के लिए उन्होंने दूसरे बनिये को आदेश दिया। "तू कुआँ बनवा दे। तुझे पुत्र होगा।" बाबा ने कहा।

बनिया अपुत्रक था। बाबा का आदेश पाते ही उसने मन्दिर के समीप एक कुआँ बनवा दिया। उसी वर्ष उसे पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। इसी प्रकार बाबा गाँव के लोगों पर अपनी कृपा की वर्षा करते रहे।

बाबा के बढ़ते प्रभाव के देखकर गाँव के कुछ ब्राह्मण स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उनके दरबार में आते रहे। एक बार एक सेठ चाँदी की थाली में सोने के कुछ सिक्के लेकर भेंट देने आया। बाबा ने उसे ग्रहण नहीं किया। सेठ भेंट लेकर वापस चला गया।

बाबा के इस व्यवहार से ब्राह्मणों का दल नाराज हो गया। वे इस रकम को बाबा के माध्यम से प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन उनकी आशाओं पर पानी फिर गया। उनका कहना था कि बाबा को जरूरत नहीं थी तो उसे लेकर हम ब्राह्मणों को बाँट देते। उन लोगों ने बदला लेने का सोचा। इसके लिए मौका ढूँढ़ने लगे।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी बाबा यज्ञ कराने वाले थे। तैयारियाँ चल रही थी। इस यज्ञ के लिए एक सेठ तीस टीन घी लेकर आया। उस समय बाबा गाँव में नहीं थे। गंगा नहाने फर्रुखाबाद गए हुए थे। मौका पाकर ब्राह्मणों ने बदला ले लिया। सेठ को बताया गया कि कुछ कारणों से इस वर्ष यज्ञ नहीं होगा।

यह समाचार सुनकर सेठ घी के टीनों को लेकर वापस चला गया। गंगा–स्नान से वापस आने के बाद बाबा को सारी बातें मालूम हुई। उन्होंने स्थानीय ब्राह्मणों को खूब फटकारा। यह एक ऐसी घटना थी जिसके कारण बाबा का मन इस गाँव से उचट गया। उनके अन्तर की घुमक्कड़ प्रवृति जाग उठी। उन्होंने इस गाँव को हमेशा के लिए छोड़ दिया। लेकिन गाँव ने इन्हें नहीं छोड़ा। वे सर्वत्र 'नीम करौली के बाबा' के नाम से आजीवन प्रसिद्ध रहे।

यहाँ से आप फतेहगढ़ आए। यहाँ से कई स्थानों का चक्कर काटते हुए अकबरपुर आए। यहाँ अपने घर न जाकर डाक बंगले में रुक गए। आपके आगमन का समाचार पाकर कुछ भक्त दर्शन करने चले आए।

बाबा सभी को 'तू' या 'तुम' कहते थे और अपने बारे में 'हम' शब्द का प्रयोग करते थे। एक दिन उपस्थित लोगों से बातचीत करते हुए सहसा पास बैठे श्यामसुन्दर शर्मा से उन्होंने कहा – "तू बगिया चला जा" अभी कोई नीम करौली के बाबा को खोजता हुआ आएगा। उसके साथ एक गूँगा–बहरा लड़का होगा। उनसे कहना कि यहाँ कोई आबा–बाबा नहीं हैं। जा, तेरा गूँगा–बहरा लड़का ठीक हो जाएगा। इसके अलावा और जो मन में आए कह देना।"

शर्मा जी तुरन्त बाहर आए। फाटक के पास पहुँचते ही एक कार आकर डाक बंगले के पास रुक गई। उसमें से एक सज्जन उतरे और कहा– "मैं फिरोजाबाद का सिविल सर्जन डॉ. बेग हूँ। पता चला है कि इस बंगले में नीम करौली के बाबा ठहरे हैं। उनसे मिलना चाहता हूँ। मेरा यह लड़का पैदाइशी गूँगा–बहरा है। काफी इलाज किया गया, पर ठीक नहीं हुआ। बाबा का आशीर्वाद मिल जाए तो ठीक हो जाएगा।"

शर्मा जी ने बाबा के निर्देशानुसार सारी बातें कहने के बाद अज्ञानतावश लड़के की ओर देखते हुए पूछा – "क्या नाम है तुम्हारा ?"

डॉ. बेग कुछ कहते, उसके पहले ही लड़के ने अस्पष्ट स्वर में अपना नाम बताया। डॉ. बेग चौंक उठे।

शर्माजी ने कहा – "आपका लड़का बोलता तो है और सुन भी लेता है। घबराने की जरुरत नहीं जल्द ठीक हो जाएगा।"

अकबरपुर से बाबा आगरा आए। यहाँ भी बाबा के अनेक भक्त थे। वे एक भक्त के यहाँ ठहर गए। आपका दर्शन करने के लिए आपके भक्त डॉक्टर लक्ष्मीचन्द्र के साथ डॉक्टर सुरेशचन्द्र मेहरोत्रा भी आए थे। इनकी शक्ल देखते ही बाबा ने कहा – "खाली हाथ क्या आया है, मिठाई खिला, हम मिठाई खाएँगे।"

तुरन्त बाजार से मिठाई मंगवाई गई। एक टुकड़ा खाने के बाद बाबा ने सारी मिठाई लोगों में बँटवा दी।

डॉ. मेहरोत्रा ने पूछा –"बाबा, किस खुशी में मिठाई बँटवाई गई ?"

बाबा ने कहा – "तू बाप बन गया है, इस खुशी में।"

यह बात सुनकर डॉ. मेहरोत्रा विस्मित हुए। उनकी पत्नी गर्भवती थी और प्रसव के सिलसिले में इन दिनों मायके गई हुई थी। बच्चा पैदा होने की सूचना अभी तक उन्हें नहीं मिली थी। ऊहापोह स्थिति में वे घर वापस आए तो इस आशय का तार प्राप्त हुआ कि उनकी पत्नी को लड़का हुआ है।

सन् 1940 के आस–पास बाबा नैनीताल आए। यहाँ आकर आदत के अनुसार चारों ओर घूमते रहे। एक बार मनोरा आए तो यहाँ का वातावरण उन्हें इतना पसन्द आया कि भविष्य में नैनीताल के भक्तों के यहाँ न रूक कर इस सुनसान स्थान में चले आते थे और किसी पेड़ के नीचे रात गुजारते थे। आगे चलकर यहाँ आश्रम तथा हनुमान जी का मन्दिर बनवाने के कारण इस स्थान का नाम हनुमानगढ़ हो गया।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी जिन दिनों उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे, उन दिनों बाबा की ख्याति सुनकर आप उनके सम्पर्क में आए थे। नैनीताल में बाबा से आपकी मुलाकात बराबर होती थी। आपने अपने एक संस्मरण में लिखा है – "नीम करौली के बाबा हमेशा

एक कम्बल ओढ़े घूमा करते हैं। वे प्रायः नैनीताल आते हैं। यहाँ हनुमानगढ़ में ठहरते हैं। यह बात कोई नहीं जानता कि वे कहाँ से आते हैं और कहाँ चले जाते हैं। कोई उनका वास्तविक नाम तक नहीं जानता।"

हनुमानगढ़ के बाद इस क्षेत्र में बाबा ने कई जगह आश्रम और मन्दिर बनवाए। भूमियाधार, काकड़ीघाट, पिथौरागढ़, धारचूला, जिप्ती, गर्जिला, बदरीनाथ, ऋषिकेश आदि स्थानों पर आश्रम बनवाए, पर मुख्य आश्रम कैंची रहा। नैनीताल से कुछ दूरी पर यह आश्रम है। नीम करौली के बाद कैंची आश्रम में उनका अधिकतर समय गुजरा है।

एक बार अनजाने क्षेत्र में आपको संदिग्ध व्यक्ति समझकर दफा 106 में चालान कर दिया गया और आप हवालात में बन्द हो गए। इस थाने के इन्चार्ज नासिर अली थे जो किसी मामले की जाँच करने के लिए दूर कहीं गए थे। रात ग्यारह बजे वापस आकर थाने का हालचाल पूछा तो पता लगा कि एक व्यक्ति को दफा 106 में बन्द कर दिया गया है। नासिर अली ने बन्दी बाबा को उड़ती निगाह से देखा और घर चले गए। दूसरे दिन भोर के समय थाने से सिपाही आया और भयभीत स्वर में कहा – "हुजूर, कल जिस आदमी को दफा 106 में बन्द किया गया था, लगता है वह कोई भूत-प्रेत है। बाहर से हवालात में ताला बन्द है,

मगर जब देखता हूँ तब वह बाहर निकल आता है। उसके बाहर आते समय ताला अपने आप खुल जाता है और उसके भीतर जाते ही बन्द हो जाता है। थाने के सभी लोग घबराए हुए हैं। मेहरबानी करके जल्दी चलिए।"

नासिर अली समझ गए कि यह आदमी कोई ऊँचे दर्जे का फकीर है जो अपना चमत्कार दिखा रहा है। तुरन्त वे थाने में आए और सिपाहियों द्वारा की गई बेअदबी के लिए माफी माँगी। बाबा ने कहा –"न तुझसे कोई गलती हुई है और न हमारी किसी तरह की तौहीनी, फिर तू माफी क्यों माँग रहा है?" बाबा की उदारता देखकर नासिर अली प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा – "अगर आप मेरे यहाँ भोजन करें तो मैं समझूँगा कि आप मुझ पर खुश हैं।"

बाबा ने कहा – "ऐसी बात? चल, आज तेरे यहाँ भोजन करूँगा।"

इस घटना के बाद नासिर अली जब कभी मुसीबत के वक्त बाबा को याद करते, उन्हें उससे छुटकारा मिल जाता था। यह बात केवल नासिर अली पर लागू नहीं थी, बल्कि ऐसे अनेक भक्त थे जिनकी समस्याएँ बाबा दूर रहकर हल कर दिया करते थे। बाबा के ऐसे चमत्कारों से कविवर सुमित्रानन्दन पन्त और श्री हरिवंश राय बच्चन भी प्रभावित हुए थे।

द्वितीय महायुद्ध की बात है। झाँसी के सिविल सर्जन बाबा के भक्त थे। उन दिनों बाबा उनके यहाँ ठहरे हुए थे। एक दिन भोजन के पश्चात् बाबा तख्त पर सो गए। सिविल सर्जन साहब ने बाबा के पास ही फर्श पर बिस्तर लगाया ताकि रात को अचानक बाबा को कोई जरूरत हो तो तुरन्त सेवा कर सकेंगे। रात एक बजे अचानक बाबा तड़पने लगे। सिविल सर्जन की नींद खुल गई। बाबा ने अपने शरीर से कम्बल उतारकर उन्हें देते हुए कहा – "इसे किसी जलाशय में फेंक आ।"

सिविल सर्जन ने कहा – "इतनी रात को कहाँ जाऊँगा ? कल सवेरे फेंकवा दूँगा।"

बाबा ने कहा– "नहीं, अभी ले जा।"

बाबा की आज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत सर्जन साहब को नहीं हुई। गैरेज से गाड़ी निकालकर चल दिए। जब वे लौटै तब सवेरा हो गया था। घर में प्रवेश करने पर उन्होंने देखा – बाबा प्रसन्न मुद्रा में सबसे बातचीत कर रहे हैं। बाद में उन्होंने बाबा से कम्बल बहाने का कारण पूछा।

बाबा ने कहा – "तेरा जो लड़का फौज में है, कल वह जर्मन सैनिकों का सामना नहीं कर सका। उसकी टुकड़ी में भगदड़ मच गई। वह स्वयं भी भागा और पहाड़ की चोटी से नीचे कूद गया। नीचे

दलदली जमीन थी, उसमें फँस गया। पहाड़ पर से सैनिक गोलियों की बौछार करते रहे। बाद में उन लोगों ने सोचा कि अब तक वह मर गया होगा। जर्मन सैनिक ऊपर से ही वापस चले गए। वे सारी गोलियाँ मेरे कम्बल में आ गई थी। उसकी गर्मी मुझे परेशान कर रही थी। जब तूने कम्बल को पानी में बहाया तब शान्ति मिली।"

बाबा इस घटना का वर्णन इस तरह कर रहे थे जैसे घटनास्थल पर स्वयं मौजूद थे। रात की नींद खराब होने के कारण सिविल सर्जन असंतुष्ट होकर भीतर चले गए। उन्होंने बाबा की बातों पर विश्वास नहीं किया।

बाबा के वापस जाने के दो सप्ताह बाद लड़के ने अपनी पत्नी के नाम पत्र लिखते हुए इस घटना का जिक्र किया। अन्त में लिखा, किसी दैवी-शक्ति के कारण मैं उस दिन जीवित बच गया। इस पत्र को पढ़ने के बाद सिविल सर्जन साहब दंग रह गए। मन ही मन अविश्वास के अपराध के लिए बाबा से क्षमा माँगते रहे।

लन्दन में बाबा के दर्शन

घटना मई 1972 की है। इस घटना का सम्बन्ध अमेरिकी महिला श्रीमती हीथर थौम्पसन से है जिनको बाबा ने भारतीय नाम सीता दिया था। उस समय आप लन्दन के एक विश्वविद्यालय में अध्ययन करती थी। आपने महाराज को देखा भी न था, केवल उनका

सुयश अपने मित्रों से सुना था। यह घटना बोध कराती है कि कैंची (भारत) में रहते हुए बाबा ने उक्त महिला को लन्दन की बस में दर्शन दिए और उस चलती बस में ही वे अन्तर्धान भी हो गए। बाबा ने आपको भारत आने की प्रेरणा दी और आपकी विषम परिस्थितियों में भी अपनी अनोखी कृपा से यथोचित साधन भी सुलभ कराया।

आप इस घटना के वर्णन में लिखती हैं, "एक दिन मैं लन्दन की बस में सफर कर रही थी। उस दिन एक डबल-डेकर बस में प्रवेश द्वार के पास की ही सीट पर बैठी थी। मेरी बगल की सीट पर कोई न था। बस लगभग खाली थी और कण्डक्टर ऊपर के कक्ष में था।"

"एकाएक बस रूकी। एक बूढ़ा भिखारी चढ़ कर ऊपर आया। उसने फटे कपड़ों की कई परत पहन रखी थी और वह अपनी भुजाओं में एक लाल-नीला कम्बल दबाए था। वह मेरे सामने खड़ा हो गया और अति आकर्षक मुस्कान से मेरी ओर देखने लगा, जैसे कह रहा हो, थोड़ा आगे सरको मैं तुम्हारी बगल में बैठना चाहता हूँ। मैं आगे खिसक गई और वह वहीं बैठ गया।"

"मुझे किसी को घूर कर देखना अच्छा नहीं लगता, इसलिए मैं कुछ मुड़ गई और खिड़की से बाहर देखने लगी। उस समय मैं मन में विचार करने लगी "कितनी प्यारी है इसकी मुस्कान! कितना अच्छा

है यह वृद्ध!" जैसे मन ही मन मैं उसे वृद्ध कह रही थी, मेरा ध्यान एकाएक कल्पना में महाराज की ओर गया। मैंने सदा यही सुना था कि वे कम्बलधारी वृद्ध कहलाते हैं। इस कारण मैंने मुड़ कर पुनः उन्हें देखना चाहा। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मेरी बगल की सीट खाली है। यह सारा खेल चन्द मिनटों का था। वे कहाँ गायब हो गये? मैंने बाहर भी देखा। वे उतरते भी तो कैसे? बस कहीं रुकी ही न थी। सड़क सुनसान थी और वह भिखारी कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।"

"मैं समझ नहीं पाई कि यह सब क्या हुआ। यह कोई कल्पना थी नहीं। दूसरे दिन मेरे कुछ मित्र मेरे पास आए और कहने लगे कि पिछली सवेरे (जब मैं बस में थी) उनके मन में तीव्र भावना जागृत हुई कि वे धन से मेरी सहायता करें जिससे मैं महाराज जी के दर्शन हेतु भारत के लिए टिकट खरीद सकूँ।"

"यह अद्‌भुत बात थी, पर मेरी एक समस्या और हल होनी थी। यद्यपि इस धन से मार्ग व्यय की पूर्ति हो रही थी पर मुझ जैसी गरीब छात्रा के पास भारत में निर्वाह के लिए और धन नहीं था। इसके हल के लिए महाराज को एक चमत्कार और करना पड़ा। इंग्लैण्ड में प्रत्येक सत्र के उपरान्त हर विद्यार्थी अपने घर आने जाने के खर्च का भुगतान युनिवर्सिटी से करवा लेता है। मैंने भी इसके लिए आवेदन पत्र दिया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि शिक्षा अधिकारियों ने जितनी मेरी

माँग थी उसकी दुगुनी धन राशि का चेक मुझे दे दिया। मैंने दूरभाष द्वारा यह गलती उन्हें दर्शायी। उन्होंने अपना खाता देख कर मुझे सूचित किया कि जो धन राशि मुझे दी गई है वह सही है। इससे मैंने यह समझा कि महाराज चाहते हैं कि मैं आकर उनके दर्शन करूँ।"

"एक महीने में ही मैं वायु मार्ग से दिल्ली आ गई और महाराज के दर्शन करने के लिए सीधे कैंची पहुँची। आश्रम में प्रवेश करते ही मैंने निश्चय किया कि मैं उनसे पूछूँगी कि आप वहीं वृद्ध हैं जिन्होंने मुझे लन्दन की बस में दर्शन दिए थे? पर जब मैं उनके पास पहुँची तो मैंने उन्हें वही कम्बल ओढ़े देखा जो वह वृद्ध बस में हाथ में लिए था और वे उसी सर्वज्ञता पूर्ण सुन्दर मुस्कान से मेरी ओर देखने लगे। इसके बाद मुझे कुछ पूछना शेष रहा नहीं, मैं जान गई कि ये वही वृद्ध हैं जो मुझे बस में मिले थे।"

"उनकी क्या कृपा दृष्टि थी। उन्होंने हमेशा के लिए मेरे हृदय और आत्मा को आनन्दित कर दिया।"

बाबा के एक भक्त हैं – केहर सिंह जो उत्तर प्रदेश शासन के सचिवालय में सचिव पद पर कार्य करते थे। अब अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। बाबा के एकनिष्ठ भक्त हैं। लखनऊ आने पर बाबा अधिकतर इन्हीं के घर ठहरते थे। इनका लड़का 2 जनवरी 1945 के दिन टेनिस खेल रहा था। अचानक गेंद उसकी आँखों से टकराया। आँख का

चश्मा फूट गया और शीशे के अनेक कण रेटिना में धँस गए। घटना की सूचना मिलते ही केहर सिंह तुरन्त आए और इसे मेडिकल कॉलेज ले गए। जाँच के बाद डॉक्टरों ने कहा – "इसका इलाज यहाँ सम्भव नहीं है। इसे यथाशीघ्र सीतापुर ले जाईए।"

आँख के इलाज के लिए सीतापुर की ख्याति समस्त उत्तर भारत में है। लड़के की एक आँख बचपन से ही खराब थी और अब दूसरी आँख भी खराब होने जा रही है। शायद जीवन भर लड़का अंधा बनकर रहेगा ? मन में यह विचार आते ही वे फफककर रो पड़े।

तभी अचानक टेलीफोन की घण्टी बज उठी। फोन उठाते ही उधर से आवाज आई – "तू रो रहा है ? सुन लड़के को सीतापुर मत ले जाना। अलीगढ़ में डॉ. मोहनलाल के यहाँ ले जा। रोने की जरूरत नहीं। सब ठीक हो जाएगा।"

केहर सिंह इतना तो समझ गए कि यह बाबा का फोन है। वे कुछ पूछना चाहते थे, पर तभी फोन रख दिया गया। बाबा का फोन करने का ढंग अलग किस्म का होता है। कहीं से किसी को वे फोन कर लेते हैं जबकि दूसरा उनसे सम्पर्क नहीं कर पाता।

बैठे–बैठे वे डॉ. मोहनलाल के बारे में सोचने लगे। तभी उन्हें याद आया कि चिकित्सा–विभाग सचिव श्री विनोद चन्द्र शर्मा की डॉ. मोहनलाल से घनिष्ठता है। तुरन्त केहर सिंह ने शर्माजी को सारी घटना

बताते हुए कहा कि आप डॉ. मोहनलाल से सम्पर्क करके मुझे सूचना दें।

थोड़ी देर बाद विनोद चन्द्र शर्मा ने फोन करते हुए कहा – "ठाकुर साहब, आप मुझसे मजाक करते हैं? डॉ. मोहनलाल को फोन करने पर ज्ञात हुआ कि तीन दिन हुए तुमने वहाँ एक कमरा रिजर्व करवाया है। बहराल मैंने उनसे कह दिया है। कल तुम लड़के को लेकर चले जाओ।"

केहर सिंह समझ गए कि यह घटना होने वाली है जानकर बाबा ने सारा प्रबन्ध पहले से कर रखा है, इसीलिए सीतापुर की जगह अलीगढ़ जाने का निर्देश मिला है। दूसरे दिन केहर सिंह की पत्नी बच्चे को लेकर अलीगढ़ गई। स्टेशन पर स्वागत के लिए डॉ. मोहन लाल उपस्थित थे।

लड़के की आँख का आपरेशन हुआ, फिर भी उसमें 20–22 कण रह गए। उन्हें निकाला नहीं जा सका। घर वापस आने के आठ–दस दिन बाद उसकी आँखों की पट्टी खोली गई तो एक नई समस्या उत्पन्न हो गई। शीशे के शेष कणों के कारण उसे अनेक बल्ब, तारे, चाँद दिखाई देने लगे। वह 4–5 फीट दूर की वस्तु देख नहीं पाता था। डॉक्टरों से शिकायत करने पर जवाब मिला – "यह तो होगा ही, अब कोई उपाय नहीं है।"

केहर सिंह मन मसोस कर रह गए। लड़का लोगों की दृष्टि में दया का पात्र बन गया। फरवरी 1958 ई. को कानपुर से सहसा बाबा का फोन आया। उस समय केहर सिंह सचिवालय जाने की तैयारी कर रहे थे। बाबा ने फोन पर आदेश दिया – "फौरन कानपुर में पं. कामता प्रसाद दीक्षित के घर चले आओ।"

सिंह साहब को समझते देर नहीं लगी कि कोई महत्त्वपूर्ण कार्य होगा। वे अपनी कार से कानपुर रवाना हो गए। अज्ञात प्रेरणावश लड़के को भी साथ ले लिया। दीक्षित जी के घर आकर केहर सिंह ने बाबा के चरण स्पर्श किया। बाबा ने बालक के हाथ को पकड़कर अपनी गोद में बैठाया और उसकी आँखों पर हाथ फेरने लगे। बाबा ने प्यार करते हुए बालक से कहा –"तेरे लिए केहर सिंह को यहाँ बुलाया"

थोड़ी देर बाद बाबा ने पुनः कहा – "केहर सिंह, अब तुम वापस अपने कार्यलय जा सकते हो।"

इस घटना के सातवें दिन बालक ने अपने पिता से कहा – "पिताजी, मेरी आँखें बिलकुल ठीक हो गई हैं। अब मैं बिना चश्में के सब कुछ देख पा रहा हूँ।"

इस सुखद समाचार को सुनकर केहर सिंह खुशी से उछल पड़े। डॉक्टर के पास जाकर उन्होंने लड़के की आँखें दिखाई। डॉक्टर ने जाँच करने के बाद कहा – "चिकित्सा–जगत् की यह अद्‌भुत घटना

है। डॉक्टर ऐसा चमत्कार नहीं कर सकते।"

केहर सिंह बाबा के प्रिय भक्तों में अन्यतम हैं। इस घटना के दो वर्ष बाद बाबा घूमते हुए लखनऊ आए। बाबा के आगमन की सूचना पाते ही केहर सिंह उनका दर्शन करने गए। बाबा को रात का भोजन करने का निमंत्रण दिया।

बाबा ने कहा – "आज नहीं, कल शाम को तेरे यहाँ आएँगे।"

दूसरे दिन केहर सिंह ने अपनी पत्नी से दो आदमियों के लायक भोजन बनाने को कहा। पत्नी को यह बात मालूम हो गई थी कि आज बाबा का अपने यहाँ निमंत्रण है।

शाम को सब्जी बनाकर वे आटा गूँथने लगी। सिंह साहब बाजार से मिठाई लाने के बाद पत्नी से बोले – "मैं बाबा को लिवाने जा रहा हूँ। उनके आने पर पूरी तलना। गर्म–गर्म पूरी वे पसन्द करते हैं।"
वापस आते समय बाबा के साथ आठ आदमी और चले आए। केहर सिंह ने सोचा – बाबा जहाँ जाते हैं, वहाँ कुछ भक्त उनके पीछे–पीछे लगे रहते हैं। सिंह साहब एक थाली सजाकर ले आए।
बाबा ने कहा – "इन लोगों को भी थाली परोस दे।"

इस आदेश को सुनते ही केहर सिंह स्तम्भित रह गए। सिंह साहब असमर्थ नहीं थे, पर सभी लोगों के लिए भोजन बनाने में नए सिरे से प्रबन्ध करना पड़ेगा। तुरन्त रसोई–घर में जाकर पत्नी से

परामर्श करने लगे। पति की बातें सुनकर पत्नी झल्लाकर बाहर चली गई।

इस स्थिति को संभालने के लिए केहर सिंह को नौकरों की सहायता लेनी पड़ी। वे सब मदद देने लगे और सिंह साहब थालियाँ सजाकर आगन्तुकों को परोसने लगे। आश्चर्य की बात यह हुई कि सभी लोगों को भरपेट भोजन कराने के बाद भी सामग्रियाँ बच गई। सिंह साहब समझ गए कि बाबा की योग शक्ति के कारण आज उनकी इज्जत बच गई। दरअसल किसी वस्तु का उत्पादन, वृद्धि या रूपान्तर कर देना योगियों के लिए सामान्य बात है। भले ही उसे लौकिक दृष्टि से चमत्कार समझा जाए।

बाबा की अतीन्द्रिय शक्ति कितनी प्रबल थी, इसका अंदाजा निम्न घटना से लगाया जा सकता है।

घटना सन् 1950 की है। उन दिनों बाबा हल्द्वानी में एक भक्त के यहाँ ठहरे हुए थे। भक्तों के प्रश्नों का उत्तर देते–देते सहसा मौन हो गए। कुछ देर बाद पास बैठे पूरनचन्द्र जोशी से उन्होंने कहा – "पूरन, एक चम्मच पानी पिला। उन्हें बहुत तकलीफ हो रही है।"

बाबा के इस कथन का क्या अर्थ है, इसे कोई समझ नहीं सका। पूरन ने एक के बदले दो चम्मच पानी पिलाया। थोड़ी देर बाद बाबा की आँखों से आँसू ढुलकने लगे। लोग अवाक् होकर देखते रहे।

बाबा ने कहा – "आज भारत का एक महान् संत चला गया। महर्षि रमण नहीं रहे।"

जिन लोगों की बाबा पर आस्था थी, उन्हें इस कथन पर विश्वास हो गया। अन्य लोग सोचने लगे कि महर्षि रमण तो तिरुमल्लाई में हैं, बाबा को यहाँ बैठे–बैठे उनके निधन की बात कैसे मालूम हो गई? दूसरे दिन समाचार पत्रों के जरिए लोगों को यह समाचार जब ज्ञात हुआ तब लोग दंग रह गए।

कैंची में आश्रम बनने के बाद बाबा का अधिकांश समय यहीं गुजरता था। लेकिन वे लोगों की जबान पर 'नीम करौली के बाबा' के नाम से प्रसिद्ध थे। यहाँ उनकी अनेक योग विभूतियाँ प्रकट हुई हैं जिसका वर्णन 'स्मृति सुधा' में प्रकाशित है।

एक बार बाबा ने आश्रम के लोगों से कहा कि आज रात भर तुम लोग पूरी बनाओ। आदेश के अनुसार काम होने लगा। दूसरे दिन लोगों को नित्य की भान्ति प्रसाद दिए गए। लोगों को यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि आखिर कई मन पूरियाँ क्यों बनवाई गई? बाबा से पूछने का साहस किसी को नहीं हो रहा था। लोगों ने समझ लिया कि सारा समान अन्त में फेंकना पड़ेगा।

उस दिन शाम होने के पहले एक बस आई और आश्रम की दीवार से इस कदर टक्कराई कि उसके दो पहिए निकल कर खड्ड में जा

गिरे। बस इस तरह खड़ी हो गई कि रास्ता बन्द हो गया। कुछ ही देर में दोनों ओर डेढ़ सौ के लगभग कार, बस आदि की लाईनें लग गई। अंधेरा बढ़ने लगा।

उन दिनों कैंची में केवल चाय की दुकान थी। आखिर इतने आदमी भोजन कहाँ करते? बाबा ने आगत सभी यात्रियों को पूरी–हलवा खिलाया। बच्चों और महिलाओं को आश्रम में तथा पुरुषों को बस में सोने का आदेश दिया। सभी लोगों को कम्बल दिए गए। यह सब देखकर आश्रमवासियों को ज्ञान हुआ कि बाबा ने कल इतनी पूरियाँ क्यों बनवाई थी।

इसी कैंची आश्रम की घटना है। बाबा की कार का ड्राईवर हबीबुल्ला खाँ था। एक दिन उसने कहा – "बाबा, गाड़ी में पैट्रोल भरवा लाऊँ।"

बाबा ने कहा कि उन्हें कहीं जाना नहीं है। दूसरे ही दिन रात को खाँ को बुलाकर उन्होंने कहा – "गाड़ी निकाल, जाना है।"

खाँ ने कहा – "गाड़ी में पैट्रोल आपने भरवाया नहीं, गाड़ी कैसे चलेगी ? इस वक्त आपको कहाँ जाना है ?"

बाबा ने कहा – "अल्मोड़ा जाना है। तू गाड़ी चला।"

गाड़ी रवाना हुई। चार या पाँच किलोमीटर चलने के बाद गाड़ी रूक गई। अब जंगल में रात गुजारनी पड़ेगी, यह समझ कर खाँ

अपनी सीट पर सो गया। यह देख कर बाबा ने कहा – "सो क्यों गया ? आसपास के किसी झरने से पानी लाकर टंकी में डाल दे।"

"क्या ?" हबीबुल्ला बुरी तरह चौंक उठा। फिर कहा – "पैट्रोल की जगह पानी डाल दूँ ? पानी छोड़ने से गाड़ी खराब हो जाएगी। अब अगर यही हुक्म दोबारा देंगे तो कल ही मैं आपकी नौकरी छोड़ दूँगा।" बाबा ने कहा – "ज्यादा पानी मत डालना। सिर्फ तीन कैन डालना।"

टंकी में पानी डालने के बाद हबीबुल्ला गाड़ी चलाने लगा। रात भर गाड़ी चलाने के बाद सवेरे आश्रम में वापस आ गया। बाबा के इस चमत्कार को देखकर वह स्वयं चकित रह गया। पानी से गाड़ी कैसे रात भर चलती रही ?

उत्तर प्रदेश कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के मंत्री श्री जगन प्रसाद रावत रानीखेत में आयोजित एक मीटिंग में भाग लेने आए थे। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद वे बाबा का दर्शन करने आए। बाबा ने उन्हें प्रसाद खिलाने के बाद कहा – "अब तू यहाँ से जल्द भाग जा।"

रावतजी जरा परेशान हुए। आखिर बाबा मुझे यहाँ से क्यों भगा रहे हैं। प्रश्न करने का साहस नहीं हुआ, तुरन्त नैनीताल चले आए। अपने कमरे में जाते ही उन्हें भूकम्प का सामना करना पड़ा। दूसरे दिन उन्हें पता चला कि भूमियाधार से नैनीताल के बीच अनेक

नुकसान हुआ है। अब उनकी समझ में आया कि बाबा ने कल क्यों भाग जाने को कहा था।

सन् 1966 ई. में कुम्भ मेला लगा। यह प्रयाग की घटना है। बाबा का कैम्प संगम के पास उस पार लगा था। कैम्प में अनेक भक्त थे। बातचीत के दौरान एक व्यक्ति ने कहा – "कड़ाके की इस सर्दी में अगर सभी को चाय मिलती तो कुछ आराम मिलता।"

अन्तर्यामी बाबा लोगों की इच्छा समझ गए। उन्होंने चाय बनाने का आदेश दिया। कैम्प में चाय, चीनी, बर्तन आदि थे, पर दूध नहीं था। ब्रह्मचारी की जबानी यह बात सुनकर बाबा ने कहा – "जा, बाल्टी ले जा। गंगा से दूध भरकर ले आ। कह देना– मईया, दूध लिए जा रहा हूँ। कल लौटा दूँगा।"

ब्रह्मचारी ने आज्ञा का पालन किया। वे गंगा से एक बाल्टी पानी ले आए। बाबा ने उसे ढक देने को कहा। कुछ देर बाद बाबा ने कहा– "अब क्या बैठा है ? चाय क्यों नहीं बनाता ?"

चूल्हे पर पानी चढ़ाने के बाद ब्रह्मचारी ने बाल्टी का ढक्कन हटाया तो देखा – एक बाल्टी दूध है। सभी लोगों ने चाय पी। दूसरे दिन एक बाल्टी दूध गंगा में प्रवाहित कर दिया गया।

इसी प्रकार एक बार बाबा दाढ़ी बनवाने के लिए एक नाई की दुकान पर गए। बाबा के बारे में नाई बहुत कुछ सुन चुका था। उसने विनयपूर्वक कहा – "बाबा, बहुत दिन हुए मेरा लड़का घर से भाग गया है। आज तक उसका पता नहीं लगा।"

कुछ देर बाद बाबा सहसा उठकर खड़े हो गए और बोले – "मुझे अभी बाहर जाना है।"

नाई ने कहा – "अभी तो आधी दाढ़ी बनी है। शेष बना लेने दीजिए।"

लेकिन बाबा ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। वे दुकान से बाहर निकल गए। पास ही लघुशंका करके वापस आए तब उनकी शेष दाढ़ी बनी। इसके बाद वे चले गए।

दूसरे दिन नाई का लड़का घर वापस आ गया। उसने विचित्र कहानी सुनाई। उसने कहा – "यहाँ से सौ मील दूर मैं एक होटल में काम करता था। कल वहाँ एक आदमी आया जिसकी आधी दाढ़ी बनी थी और दूसरी ओर साबुन लगा था। उन्होंने मुझे पचास रुपये देकर कहा कि तुम आज ही पहली गाड़ी से घर चले जाओ।"

घटना लखनऊ की है। बाबा लखनऊ आकर कभी-कभी कर्णवीर के यहाँ ठहर जाते थे। कर्णवीर बचपन से उन्हें देखता आ रहा

है। अक्सर जब वह बाबा को चिढ़ाता तब घर के लोग उस पर बिगड़ उठते थे।

एक बार बाबा इनके यहाँ आए और कर्णवीर से कहा – "कर्णवीर, तू गोविन्द बल्लभ पंत के यहाँ चला जा। उन्हें यहाँ बुला ला। कहना बाबा ने बुलाया है।"

कर्णवीर ने कहा – "पन्तजी अब कांग्रेसी नेता नहीं हैं। मुख्यमंत्री हैं। उनसे मुलाकात करना आसान नहीं है।"

बाबा ने कहा – "तू उनके घर में घुसते चले जाना और कह देना कि बाबा ने बुलाया है।"

कर्णवीर ने हँसकर कहा – "यह बात कहूँगा तब न, जब मुझे कोई उनके बंगले में घुसने देगा। पकड़कर बन्द कर देंगे तब मेरी जमानत देने वाला कोई नहीं मिलेगा।"

बाबा बार–बार उसे समझाते रहे कि तू एक बार वहाँ चला जा। तुझे कोई कुछ नहीं कहेगा। दूसरी ओर कर्णवीर बराबर इन्कार करता रहा।

अन्त में बाबा ने खिजलाकर कहा – "मत जा! हम उसे यहीं बुला लेंगे।"

इसके बाद बाबा कुछ देर तक इधर–उधर की बातें करने के बाद बोले – "आओ, जरा सड़क पर टहलें।"

पाँच–सात मिनट टहलने के बाद कर्णवीर ने देखा कि लालबत्ती वाली एक गाड़ी बाबा के पास आकर रुक गई। उसमें से पं. गोविन्द बल्लभ पंत बाहर निकलने लगे। तभी बाबा ने पंतजी से कहा – "तू गाड़ी में बैठ। हम तेरे साथ चलेंगे।"

इतना कहकर बाबा गाड़ी के भीतर बैठ गए। फिर बाहर झाँकते हुए कर्णवीर से बोले – "देख, बुला लिया। अब हम जाते हैं।"

अचल समाधि

बाबा की परमहंसावस्था रही। वे सदा चल समाधि में रहते थे। अपनी अलौकिक शक्ति से वे किसी को भी थोड़े समय के लिए अचल समाधि में प्रवेश करा देते थे। बिड़ला विद्यालय नैनीताल के श्री किशन चन्द्र तिवारी, सहकारी विभाग उत्तर प्रदेश के श्री नन्दाबल्लभ जोशी, उत्तर रेलवे कानपुर के श्री गुरुदत्त शर्मा आदि अनेकानेक भक्तों को उनकी कृपा से समाधि लगा करती थी।

अचल समाधि एक अलौकिक आनन्दावस्था है। इसमें व्यक्ति अपने को बड़ा हल्का पाता है। उसकी बाह्य चेतना शून्य हो जाती है। शरीर जड़वत् हो निश्चल हो जाता है। हृदय की गति बहुत मन्द हो जाती है। आंतरिक चेतना केवल एक बिन्दु पर स्थित रहती है। यद्यपि यह स्थिति व्यक्ति में बाबा की दृष्टि या स्पर्श मात्र से पैदा होती

दिखाई देती थी, पर मूल में यह उनकी इच्छा शक्ति का ही खेल था। अपने दरबार में वे किसी की भी समाधि लगा कर लोगों का मनोरंजन करते रहते थे।

चर्च लेन इलाहाबाद में एक बार बाबा ने अपने दरबार में गुरुदत्त शर्मा जी को समाधिस्थ कर दिया और वहाँ उपस्थित एक नवागन्तुक डॉक्टर से कहने लगे, "देख इसे क्या हो गया ?" डाक्टर की बुद्धि चकरा गई। वह कुछ घबरा सा गया और इसका कुछ कारण समझ नहीं पाया। बाबा का आदेश पाकर कुछ लोगों ने उस जड़ एवं निश्चल व्यक्ति को दरबार से उठाकर दूसरे कमरे में रख दिया। कुछ समय बाद बाबा ने वहाँ जाकर अपने स्पर्श से उन्हें चैतन्य कर दिया।

शर्मा जी बताते है कि एक बार मेजर रिखी के निवास स्थान दिल्ली में बाबा ने इसी प्रकार उन्हें समाधिस्थ कर दिया था। शर्मा जी कहते हैं कि हो सकता है, वहाँ पर उपस्थित किसी व्यक्ति को मेरी चेतना शून्य स्थिति में संदेह हुआ और सम्भवत: वास्तविकता जानने के लिए ही उसने मेरे पैर में ब्लेड मार दिया हो। फलत: मेरे पैर से फर्श पर रक्त प्रवाहित होने लगा। मुझे इसका भान भी नहीं हुआ। रिखी साहब का ध्यान जब इस ओर गया तो उन्होंने चिकित्सा करवाई। चैतन्य होने पर जब मैंने अपने पैर में पट्टी देखी तो मुझे आश्चर्य हुआ।

कैंची में निवास करते एक दिन पं. शंकर प्रसाद जी व्यास (बनारस वाले) को शाम के समय बाबा के साथ टहलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आश्रम के सामने की सड़क पर बाबा व्यास जी के कन्धे पर हाथ रख कर चल रहे थे। वे अपने विचारों में मग्न दिखाई दिए, इस कारण व्यास जी भी मौन रहे। एकाएक व्यास जी के मन में एक विचार आया कि लोग बाबा को हनुमान का अवतार बताते हैं, पर इस बात पर विश्वास कैसे किया जाए? ऐसा सोचते ही अपने कन्धे पर रखा हुआ बाबा का हाथ उन्हें कुछ भारी प्रतीत होने लगा और धीरे-धीरे उसका भार बढ़ता ही चला गया, यहाँ तक कि उनका कन्धा जवाब देने लगा। हाथ सहज रूप से आपके कन्धे पर पड़ा था और उसका आकार यथावत् था। व्यास जी भीतर ही भीतर बहुत परेशान हो गए। प्रेम से रखे गए इस महान् विभूति के हाथ को हटाने में भी आपको संकोच हो रहा था। अपनी ऐसी विवशता में आप मन ही मन बाबा (हनुमान जी) से प्रार्थना करने लगे कि मुझे मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें। ऐसा कहते ही स्थिति पूर्ववत् हो गई। इस प्रकार आपकी धारणा पक्की हो गई कि बाबा निश्चय ही हनुमान के अवतार हैं।

यह बहुचर्चित पुरानी घटना वृंदावन की है। एक बार बाबा का एक भक्त अपने नास्तिक मित्र को लेकर बाबा के दर्शन को आया। उसके मित्र को उनके दर्शन की इच्छा भी न थी, वह केवल उसका साथ

देने वहाँ आया था। महाराज ने अपने भक्त को पास बिठा लिया और दूसरे से हनुमान मन्दिर के चबूतरे पर बैठने को कहा। वह बहुत देर तक वहाँ उसके आने की प्रतीक्षा में बैठा रहा और ऊब गया। फिर ज्योंही उसने मुड़ कर पीछे देखा तो उसकी दृष्टि हनुमान जी के विग्रह पर पड़ी। उसे उस मूर्ति की आँखों से आँसू टपकते दिखाई दिए। ये आँसुओं की बूँदे टपक-टपक कर हनुमान जी के वक्षस्थल पर गिर रही थी। इस दृश्य से उसकी बुद्धि चकरा गई और उसके विचारों और भावों में मौलिक परिवर्तन होने लगे। जिसे अब तक वह पत्थर की मूर्ति समझे थे, उसमें उसे हनुमान जी का आभास मिला।

नीम करौली के बाबा बीसवीं शताब्दी के उच्च रूप महापुरुष थे। हिमालय के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा बाबा ने लखनऊ, कानपुर, शिमला आदि शहरों में हनुमानजी का मन्दिर बनवाया है। उनका एक अमेरिकी भक्त डॉ. रिचार्ड एल्पर्ट ने न्यू मैक्सिको स्थित टाओस में एक हनुमानजी का मन्दिर बनवाया है जहाँ अमेरिकी नागरिक तथा वहाँ स्थित भारतीय नित्य दर्शन करते हैं।

बाबा जीवन भर यायावरों की तरह घूमते रहे। लेकिन सन् 1973 के बाद से वे कैंची आश्रम से बाहर नहीं निकले। यह उनकी प्रवृति के विरुद्ध था। सन् 1972 में एक बार एक भक्त से पूछा था – "हमें अपना शरीर कहाँ छोड़ना चाहिए।"

इस प्रश्न को सुनकर सभी भक्त बैचैन हो उठे। किसी भी महात्मा का इस तरह का प्रश्न करना अशुभ होता है। उन दिनों जो लोग उनका दर्शन करने आते, उनसे कहते – "अब हमारी मुलाकात नहीं होगी।"

8 सितम्बर 1973 को वे अस्वस्थ हुए। भक्त लोग तुरन्त उन्हें वृन्दावन के अस्पताल में ले आए। गहन चिकित्सा आरम्भ हुई। 11 सितम्बर को नीम करौली के बाबा इस धराधाम से सदा के लिए चले गए।

निःस्वार्थी व सेवा भावी व्यक्ति पर कृपा

आम तौर पर समाज में यह मान्यता प्रचलित है कि सिद्ध पुरुषों की कृपा पाने के लिए उनकी पूजा–अर्चना, चरण–वन्दना करनी होती है अथवा उनसे दीक्षित होना पड़ता है। जब लेखक छात्र जीवन में था तब मन में एक प्रश्न उठता था कि देवशक्तियाँ क्या चापलूसी पसन्द करती हैं। अन्तरात्मा से उत्तर मिलता था नहीं। 'युगऋषि श्रीराम आचार्य' जी का साहित्य पढ़ने पर पता चला कि साधना, पूजा–पाठ, कर्म–काण्ड का उद्देश्य मानव के अंतःकरण को निर्मल बनाना ही है। जैसे–जैसे मानव मन शुद्ध व पवित्र होता जाता है वैसे–वैसे व्यक्ति की पात्रता दैव कृपा धारण के लिए बढ़ती जाती है। कहते हैं–

"मन चंगा तो कठौती में गंगा"

मन की पवित्रता के लिए माध्यम कुछ भी हो सकता है- कर्म-योग, भक्ति-योग, ज्ञान-योग, ध्यान-योग, जप-योग आदि-आदि। इनमें से कर्म योग को सबके लिए आवश्यक व सरल कहा गया है। क्योंकि व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए कोई न कोई कर्म अवश्य करना होता है। यदि हम कर्म योग साध लें तो अन्य योग स्वत: ही आत्मा में प्रकाशित हो जाते हैं। यदि कर्म गलत करते रहें और उनको सुधारने का प्रयत्न न करें तो अन्य ज्ञान, ध्यान कुछ भी फलीभूत नहीं हो पाएगा। इसलिए भगवद्गीता को निष्काम कर्म योग का शास्त्र माना जाता है।

हम यहाँ एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देने जा रहे हैं जिन्होंने रोगियों की चिकित्सा सेवा भाव से करते-करते महान शक्तियों व सिद्धियों के धनी नीम करौली के बाबा का हृदय जीत लिया जबकि वो उनको जानते तक न थे।

नीम करौली के बाबा एक बार इलाहाबाद आए। भक्तों व रोगियों की भीड़ उनके पास बड़ी संख्या में जुट गयी। इलाहाबाद में एक होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ॰ ब्रह्मस्वरुप सक्सेना उच्च न्यायालय के समीप अपने घर पर ही रोगियों की सस्ती व अच्छी चिकित्सा करते थे। उनकी पत्नी अक्सर उनको अधिक धन कमाने के लिए प्रेरित

करती, गरीबी का रोना रोती थी। परन्तु डॉ॰ साहब शान्त भाव से पत्नी के ताने सह लेते व रोगियों की बड़ी सहृदयता से सेवा करते थे। एक बार उनके क्लीनिक में ऐसा विचित्र रोगी आया, जिसकी दोनों आँखें चेहरे से बाहर निकल आई थी। सक्सेना जी उसे देखकर घबरा गए, क्योंकि यह तो सर्जरी का केस था। वे रोगी से बोले आप किसी सर्जन के पास चले जाइए। मेरे पास इसका कोई समाधान नहीं है। मेरी दवा से आपका कैसे भला हो सकता है। रोगी ने कहा– डॉक्टर साहब ! आप ही मेरी चिकित्सा करेंगे और मैं आप से ही दवा लूँगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दवा खाने के बाद मैं स्वस्थ हो जाऊँगा। सक्सेना जी ने कहा – मेरी दवा में कोई जादू नहीं है और न ही मैं कोई जादू टोना जानता हूँ, जो तुम्हें ठीक कर दूँगा। रोगी ने कहा– आप निश्चिन्त होकर दवा दें, क्योंकि हमारे इष्ट एवं आराध्य बाबा नीम करौली ने कहा है कि आपकी दवा से हम स्वस्थ एवं प्रसन्न हो जाएँगे।

सक्सेना जी बड़े असमंजस में पड़ गए। जैसे–तैसे उन्होंने उसे दर्दनिवारक अर्निका की गोलियाँ दे दी। रोगी ने जैसे ही उसे खाया, उसकी आँखे अंदर धँस गई और उसका भयावह चेहरा शान्त एवं सौम्य हो गया। उसे देख वहाँ सभी लोग हैरान एवं हतप्रभ थे। इस घटना के पश्चात् उनके यहाँ असाध्य रोगियों का आवागमन बढ़ गया। सभी असाध्य रोगी कहते कि उन्हें बाबा नीम करौली ने भेजा है।

सक्सेना जी की मीठीं गोलियों से वे न केवल स्वस्थ होते थे बल्कि उनका स्वास्थ्य सामान्य रोगियों की तुलना में शीघ्रता से सुधरता था। सामान्य रोगी देरी से ठीक होते थे और असाध्य रोगी जल्दी स्वस्थ होते थे। यह जानकर सब असमंजस में पड़ जाते। सबसे हैरानी की बात तो यह थी कि डॉ॰ सक्सेना बाबा से सर्वथा अपरिचित थे। वे उन्हें कहीं से भी नहीं जानते थे, परंतु इस घटना से उनके अंदर श्रद्धा एवं विश्वास का अंकुरण होने लगा।

एक दिन अचानक सक्सेना जी की क्लीनिक में एक व्यक्ति प्रविष्ट हुए। वह व्यक्ति नंगे पैर थे, श्वेत धोती एवं कम्बल ओढ़े थे। उन्नत ललाट, जाज्वल्यमान आँखें तथा चेहरा दिव्य कांति से सराबोर था। उनकी बोली ऐसी थी कि बस सुनते रहने का मन करता था। उन्होंने डॉक्टर सक्सेना जी से कहा– "मैं अपनी हथेली में कुछ गरमी सी महसूस कर रहा हूँ। कोई दवा तो दे दो।" सक्सेना जी ने इस व्यक्ति से उसके संदर्भ में कुछ पूछना चाहा। उस व्यक्ति ने कहा– "सक्सेना जी! ये सब पूछने वाली बातें हमें पसन्द नहीं। आपको हमें जो समझ में आए वो दवा दे दो और हाँ! ध्यान रखना, फिर हम आपके पास दोबारा कभी नहीं आएँगे, इसलिए अधिक मात्रा में दवा दो।" बाबा जी ने सक्सेना साहब से कुछ बातें की और दवा उठाकर चल दिए। बाहर जाते ही उन्हें दो मरीजों ने पहचान लिया। यह बात आग की तरह

आस–पास फैल गई और उनके दर्शनों के लिए भीड़ जुटने लगी। मरीजों ने डॉ॰ साहब को बताया ये ही नीम करौली के बाबा हैं।

सक्सेना जी का हृदय इस बात से ग्लानि से भर गया कि स्वयं भगवान उनके द्वार पर आया और एक घंटे से अपनी बारी की प्रतीक्षा में बाहर बैठा रहा, वे उन्हें पहचान न सके। इसके पश्चात् उनका जीवन ही बदल गया उनकी सारी चिन्ताएँ दु:ख दर्द सदा के लिए शान्त हो गए। उनके हृदय में भक्ति की अनावरत धारा बह उठी। वे अब बड़े भावपूर्ण ढंग से मरीजों की सेवा में जुट गए।

बाबा जी हनुमान भक्ति करते–करते हनुमानमय हो गए थे। वह कहा करते थे कि हनुमान जी इस युग के जीवन्त देव हैं। उन्हें भाव भरे हृदय से पुकारें, तो प्रत्यक्ष खड़े हो जाते हैं। इन्सान हृदय से पुकारे तो कुछ भी असम्भव नहीं रह जाता है, परन्तु पुकार ही तो नहीं पाता है। व्यर्थ की उलझनों में उलझा अपना जीवन नष्ट करता रहता है।

नता ययो: श्रीपतितां समीयु:, कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्या।
मूकश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां, नमो नम: श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥3 ॥
नालीकनीकाशपदादृताभ्यां, नानाविमोहादिनिवारकाभ्याम्।
नमज्जनाभिष्टतत्प्रदाभ्यां, नमो नम: श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥4 ॥

बाबा जी के प्रमुख शिष्य

वैसे तो अमेरिका, फ्राँस, जर्मन, भारत में बाबा जी के लाखों भक्त व शिष्य हुए हैं। परन्तु समाज में जिनका नाम अधिक प्रचलित हुआ है उनमें से कुछ गिने चुने शिष्य निम्न हैं–

1. स्टीव जॉब्स (संस्थापक APPLE Computers)

2. मार्क जुकरबर्ग (संस्थापक FACEBOOK)

3. रिचर्ड एलपर्ट (Professor, Harvard University)

4. कृष्णदास (प्रसिद्ध गायक व संगीतज्ञ)

5. जूलिया रॉबर्टस (हालीवुड अभिनेत्री)

6. डेनियल गोलमैन (सुप्रसिद्ध साहित्यकार व दार्शनिक)

7. लैरी ब्रिलिएंट (प्रसिद्ध WHO चिकित्सक)

8. भारत रत्न वी. वी. गिरी

9. Yvette Claire Rosser (Ram Rani, USA Scholar)

10. योगी भगवान दास (Kermit Michael Riggs)

11. Jai Uttal (Musician)

12. लामा सूर्य दास (Jeffrey Miller)

1. Steve Jobs (Apple founder & CEO)

स्टीव जॉब्स सन् 1970 के दशक में भारतीय अध्यात्म से बहुत प्रभावित हुए थे। इनका जन्म 24 फरवरी 1955 को एक मुस्लिम परिवार में San Francisco में हुआ था। इनके पिता 'अब्दुल फाटाह जन्डाली' सीरिया के निवासी थे व माता एक साधारण घरेलू महिला थी। परन्तु जन्म के पश्चात् इनका पालन पोषण एक ईसाई परिवार में हुआ था। कुछ कारणों वश जन्म के पश्चात् इनका पालन पोषण दूसरे परिवार को दे दिया गया था। इनके पालनकर्त्ता पिता 'पाल जॉब्स' एक जर्मनवासी थे व माता 'कलारा' एक अमेरिकी महिला थी। कलारा San Francisco में रहती थी परन्तु इनके पति द्वितीय विश्वयुद्ध में मारे गए थे। इनका दूसरा विवाह पाल जॉब्स के साथ सन् 1946 में हुआ था। किसी रोग के कारण इस दम्पत्ति को सन्तान नहीं हो रही थी। इस कारण इन्होंने स्टीव जॉब्स को गोद ले लिया था। परन्तु इनकी इच्छा एक लड़की को गोद लेने की थी। इस परिवार ने एक अन्य कन्या पैटरिसिया को भी 1957 में गोद लिया व ये लोग सन् 1961 में कैलिफोर्निया जाकर बस गए। इनके पिता वहाँ एक गैराज में कारें बनाने व ठीक करने का कार्य करते थे व इनको भी कारों का एक मैकेनिक बनाना चाहते थे। परन्तु इनका ध्यान इलैक्ट्रानिक उपकरणों की ओर लगा रहता था। ये एक अच्छे विद्यार्थी नहीं थे व अक्सर

विद्यालयों में अपने व्यवहार के कारण समस्याएँ उत्पन्न करते रहते थे। सन् 1968 में मात्र 13 वर्ष की उम्र में ये अपने कुछ मित्रों की मदद से Hewlett Packard की कम्पनी में कार्य करने जाया करते थे। सन् 1970 में इनके जीवन में अचानक परिवर्तन आया व इनका झुकाव साहित्य की ओर हुआ। अब ये शेक्सपियर, प्लेटो आदि को पढ़ने लगे। अब जॉब्स के सम्पर्क में दो प्रकार की मित्र मण्डली हो गई एक वह जो विज्ञान व तकनीकी से जुड़ी थी व दूसरी साहित्य प्रेमी। इन्हीं दिनों हिप्पीयों के सम्पर्क में आए व हिप्पी मण्डली में सम्मिलित हो गए।

कुछ अच्छे मित्रों का साथ भी होने से इन्होंने सन् 1972 में Homestead High School व बाद में Read College Join किया। Read College काफी महंगा था व इनके माता पिता इसका खर्च वहन नहीं कर पा रहे थे। इन दिनों ये अपना खर्च Coke की खाली बोतलें बेच कर चलाते थे व भोजन के लिए हरे कृष्ण मन्दिर में जाया करते थे। इनके एक प्रिय दोस्त को वीडियों गेम बनाने का शोक था। इन्होंने जब यह गेम कम्पनी को दिखाया तो इन्हें वहाँ Technician की नौकरी मिल गई। अब इनके मन में भारत भ्रमण की इच्छा उत्पन्न हुई और ये नौकरी करते हुए धन संग्रह करने लगे ताकि भारत की यात्रा कर सकें। इस समय ये बहुत ही सामान्य जीवन व्यतीत करते थे।

अपने एक मित्र डेनियल कोटके के साथ Mid-1974 में ये आध्यात्मिक उन्नति (Spiritual Enlightment) की इच्छा से भारत के लिए रवाना हुए। भारत में ये सस्ते होटलों में ठहरने के कारण कई बार रोगग्रस्त हुए। अन्त में ये हरिद्वार आदि भ्रमण करते हुए कैंची धाम नैनीताल पहुँचे। इस समय तक नीम करौली के बाबा शरीर छोड़ चुके थे। भारतीय वेशभूषा धारण किए इस आश्रम में ये ध्यान आदि के गहन अभ्यास करते थे। कहा जाता है कि इस आश्रम में इनको अनेक आश्चर्यजनक अनुभव हुए व इनकी प्रतिभा में अद्‌भुत वृद्धि हुई। अभी तक इनका सामान्य व अस्त-व्यस्त जीवन चल रहा था परन्तु अब इनके आत्मविश्वास में बहुत वृद्धि हुई। सात माह भारत में रहने के उपरान्त जब ये अमेरिका लौटे

तो इनको एक के बाद एक सफलता हासिल होती चली गई। तत्पश्चात् ये अपने कुछ मित्रों के साथ कम्प्यूटर के कार्य में जुट गए। पहला Apple Computer एक मित्र की गैराज में तैयार हुआ था।

अमेरिका में इन दिनों ये अपनी एक Girl Friend Brennan के साथ Zen Master के पास बौद्ध ध्यान के लिए भी जाया करते थे। सन् 1977 में इनकी मित्र मण्डली सफलता के बड़े आयाम छूने लगी परन्तु इनमें आपसी झगड़े बढ़ने लगे।

सन् 1978 में मात्र 23 वर्ष की उम्र में जॉब्स एक मिलियन डॉलर के स्वामी बन गए। 24 वर्ष की आयु में 10 मिलियन डॉलर व 25 वर्ष की आयु में 100 मिलियन डॉलर की पूँजी के साथ अमेरिका में सबसे कम आयु के अमीर व्यक्तियों की गिनती में आने लगे। छः वर्ष पूर्व जो खाली बोतलें बेचता था व भूख लगने पर मन्दिर में भोजन करने जाता था। वह अमेरिका के बड़े अमीर व्यक्तियों में गिना जाने लगा। इसका श्रेय वो नीम करौली वाले बाबा के आशीर्वाद व अपनी भारत यात्रा को देते हैं।

2. मार्क जुकरबर्ग

ऐसा माना जाता है कि Facebook के Founder Mark Zuckerburg की सफलता के पीछे भी बाबा जी का आशीर्वाद है। जुकरबर्ग उन दिनों Harvard में पढ़ते थे व Facebook को launch किया। जब कई वर्षों तक इनको सफलता न मिली तो इन्होंने Steve Jobs से अल्प आयु में उनकी सफलता का रहस्य पूछा। Steve Jobs ने इनको बाबा जी का आशीर्वाद लेने का निर्देश दिया। यह घटना सन् 2006 की है जबकि Zuckerburg अपनी Facebook के घाटे से तंग आकर उसको बेचने की योजना बना रहे थे। Steve Jobs के आग्रह पर वह सन् 2008 में भारत आए व कैंची धाम में रहे। कहते हैं कि जब ये कैंची धाम आए थे इनके पास कोई सामान नहीं था मात्र इनके हाथ में

एक पुस्तक थी। इस समय इन्होंने आश्रम का दिव्य प्रसाद लिया व निःस्वार्थी और सेवाभावी जीवन जीने का संकल्प किया। इसके पश्चात् इनका भाग्योदय हुआ व ये अल्पायु में ही अमेरिका के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में माने जाने लगे। सर्वविदित है कि 31 वर्ष की अल्पायु में इन्होंने अपनी कम्पनी के 99% शेयर मानवकल्याण के लिए समर्पित कर दिए। अमेरिका में ऐसे कई उद्योगपति हैं जिन्होंने 50 वर्ष की आयु के उपरान्त अपना धन समाज कल्याण में लगाया। आज इनकी गिनती अमेरिका के अल्पायु के दानवीरों में होती है। सत्य ही कहा गया है कि सिद्ध पुरुषों की कृपा निस्वार्थी व सेवा भावी व्यक्तियों को ही मिलती है।

यह बातें पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अमेरिका यात्रा के दौरान चर्चा में आई। इनका अधिक से विवरण जानने के लिए निम्न Websites को Follow करें जहाँ विभिन्न चैनलों ने इसको विस्तार से कवर किया है–

http://www.indiatvnews.com/news/india/neem-karoli-baba-facebook-mark-zuckerberg-apple-steve-jobs-54973.html

https://www.youtube.com/watch?v=d-_t6OKJnZo

https://www.youtube.com/watch?v=csE2j9Hfkg8

https://www.youtube.com/watch?v=gcJ5KEyp1hY

https://www.youtube.com/watch?v=d-_t6OKJnZo

कई बार विद्यार्थियों के द्वारा यह प्रश्न पूछा जाता है कि बाबा जी का अनुग्रह विदेशियों पर ही क्यों भारतीयों पर इस प्रकार के चमत्कार क्यों नहीं हुए। इसका उत्तर बढ़ा ही सरल है परम ब्रह्म के स्तर पर पहुँचे हुए महायोगियों के लिए सम्पूर्ण सृष्टि उनके कुटुम्ब के समान है उनके लिए देशी–विदेशी हर कोई समान है। जनकल्याण की भावना रखने वाला कोई भी व्यक्ति अहंकार रहित हो कर उनसे याचना करता है तो ये महापुरुष उसको अपनी कृपा व मार्गदर्शन से सदैव अनुग्रहित करते हैं।

3. बाबा रामदास (रिचर्ड एल्पर्ट)

जिस प्रकार दक्षिणेश्वर के महान सन्त रामकृष्ण परमहंस को पूरे विश्व में प्रसिद्ध करने का श्रेय स्वामी विवेकानन्द को जाता है। इसी प्रकार नीम करौली वाले बाबा को अमेरिका, जर्मन, फ्राँस में पहुँचाने का कार्य बाबा के एक अमेरिकन शिष्य रिचर्ड एलपर्ट ने किया जो बाद में बाबा रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म 6 अप्रैल 1931 को एक उच्च वंश एवं समृद्ध परिवार में हुआ था। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और Stanford University से Psychology में Ph.D. करके Harvard University में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इन्होंने अपने एक मित्र Timothy Leary के साथ मिलकर Harvard में अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्वों को सफलतापूर्वक

निर्वाह किया। परन्तु अचानक इनका ध्यान नशीली दवाओं (LSD etc.) के द्वारा मनुष्य में शान्ति और अध्यात्म की प्राप्ति की ओर गया। इस दिशा में इन्होंने गहन शोध कार्य किया परन्तु इससे ये विवाद के घेरे में आते चले गए और अन्ततः इन्हें Harvard University से निष्कासित कर दिया गया।

तत्पश्चात् इनकी रूचि अध्यात्म की ओर बढ़ती गई परन्तु इन्हें कोई उपयुक्त दिशा नहीं मिल पा रही थी। सन् 1967 में अपनी शोधों के विषय में अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारी पाने के लिए ये भारत रवाना हुए। भारत यात्रा में इनका सहयोग एक अमेरिकिन आध्यात्मिक जिज्ञासु भगवानदास ने किया। ये जानना चाहते थे कि अध्यात्म की जन्म भूमि भारत में कैसे नशीली दवाओं LSD आदि के द्वारा समाधि तक पहुँचा जाता है। यहाँ के बाबाओं के नशा सेवन के विषय में इनके मन में अनेक भ्रम थे।

भगवान दास प्रो. रिचर्ड को नीम करौली के बाबा के आश्रम में लेकर आए व उनकी महिमा का बखान किया। प्रो. रिचर्ड के मन में इस प्रकार की धारणाएँ रहती थी कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए नशा व वासना आवश्यक है परन्तु आश्रम के दिव्य वातावरण से ये बड़े निराश हुए। बेमन से आश्रम में पहली रात्रि में बिस्तर पर करवटें बदल रहे थे व कभी-कभी बैचेनी से इधर-उधर टहल रहे थे। इनको अपनी

माँ से बहुत प्रेम था जिसकी मृत्यु हो चुकी थी। इस अवस्था में इन्हें अपनी माँ की याद सताने लगी और ये खुले आसमान को निहारने लगे। तभी इनको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आकाश में तारों के पीछे इनकी माँ की छवि प्रकट हुई व इन्हें आश्वासन दिया कि वो सही जगह आ गए हैं व इनसे अन्य अनेक बातें की। इस घटना से इन्हें बड़ी शान्ति मिली और चुपचाप जाकर सो गए। अगले दिन जब प्रात: बाबा जी के दर्शनों को गए तो इनके मन में थोड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो चुकी थी। बाबा ने बड़े प्रेम से इनके ऊपर अपना हाथ रखा व पूछा – "कल रात तू खुले आकाश के नीचे खड़ा रहा, तेरी माँ ने तुझसे क्या कहा? क्या तेरी माँ पिछले साल मर गई थी? स्पलीन के कष्ट से मरी?" बाबा के इन प्रश्नों से एलपर्ट साहब चकरा गए। इस घटना का जिक्र उन्होंने किसी से नहीं किया था। फिर उन्हें यह कैसे मालूम है? बाबा ने इस पर इनकी माँ के बारे में व इनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में अनेक प्रसंगों का जिक्र किया जिसको ये व इनकी माँ के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। अब इनको एक बात तो समझ आ गई कि बाबा जी सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। धीरे–धीरे बाबा जी के प्रति इनका प्रेम बढ़ता गया। ये अक्सर बाबा जी की गोद में अपना सिर रखकर लेट जाया करते थे व मातृवत् स्नेह पाकर बड़ी सुख–शान्ति अनुभव करते थे। परन्तु इनके मन में एक शंका अपनी नशीली दवा LSD के सेवन के

विषय में रहा करती थी। एक दिन बाबा जी ने इनसे कहा "क्या तू अपनी दवा मुझे नहीं दिखाएगा ?" इन्होंने बाबा जी को दिखाने के लिए जेब से शीशी निकालकर तीन-चार गोलियाँ अपने हाथ में रखी। बाबा जी ने फट से गोलियाँ इनके हाथ से छिनी व खा गए। प्रो. रिचर्ड के तो होश उड़ गए इतनी भारी मात्रा में LSD के सेवन से कुछ भी घटित हो सकता था। परन्तु बाबा जी पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा व बाबा जी चुपचाप मुस्कराते रहे व अपनी सामान्य गतिविधियों में संलगन रहे। इनकी समझ में यह बात भी आने लगी कि बाबा जी प्रकृति के बन्धनों से मुक्त एक महान योगी हैं जो अपनी शक्ति के बल पर असम्भव को भी संभव बनाने में समर्थ हैं।

धीरे-धीरे करके बाबा जी के चरणों में बैठकर इन्होंने भारतीय अध्यात्म विद्याओं का अध्ययन मनन चिन्तन करना व योग साधना का अभ्यास प्रारम्भ किया व महान सन्त रामदास बन गए।

इन रामदास में अपने गुरु के प्रति भक्ति तो थी, किंतु साथ ही कहीं सिद्ध-शक्ति की आकांक्षा भी छुपी थी। एक बार वह एक स्वामी जी के साथ दक्षिण भारत की यात्रा कर रहे थे। बातों ही बातों में उन्होंने अपनी सिद्ध-शक्ति की चाहत के बारे में स्वामी जी को बताया। स्वामी जी ने उन्हें एक शक्तिशाली शिव मंत्र की दीक्षा दी और बताया कि इस मंत्र का जाप करने से वह अपार सम्पत्ति व शक्ति का स्वामी हो

जाएगा। रामदास को शक्ति लोभ तो था ही सो वह लगातार कई हफ्ते तक मंत्र को जाप करते रहे। इस मंत्र जाप के प्रभाव से शरीर के बाहर होने व सूक्ष्म शरीर से भ्रमण की शक्ति मिल गई।

बस फिर क्या था रामदास का कौतुकी मन जाग उठा और सूक्ष्म शरीर से निकल कर भ्रमण करने लगे। इसमें उन्हें आंनद आने लगा। इस क्रम में उनकी यात्रा अन्य सूक्ष्म लोक-लोकान्तरों में भी होने लगी। एक बार जब वह अपनी इस प्रक्रिया के दौरान किसी अन्य लोक में पहुँचे, तो वहाँ उन्हें अपने सद्‌गुरु बाबा नीम करौली दिखाई दिये। रामदास को अचरज भी हुआ और हर्ष भी। वे हर्षोन्माद में बाबा नीम करौली की ओर दौड़ पड़े। बाबा उस समय अपने तख्त पर एक कम्बल ओढ़े बैठे थे। उनके आने पर उन्होंने कम्बल से अपना मुँह ढक लिया और तीन बार ऐसी फूँक मारी जैसे कि कोई मोमबत्ती बुझा रहा हों। उनकी इस फूँक से रामदास को महसूस हुआ कि जैसे हर फूँक के साथ उनका शरीर फूलता जा रहा है, मानो उनकी किसी आन्तरिक नली में हवा भरी जा रही हो। तीसरी बार की फूँक के बाद रामदास ने स्वयं को अपने स्थूल शरीर में पाया और वह अपने उसी स्थान पर थे, जहाँ उनकी नियमित साधना हो रही थी। लेकिन इस समूची प्रक्रिया में एक अचरज घटित हुआ कि दक्षिण भारत की यात्रा में स्वामी जी ने उन्हें जो मंत्र दिया था, उसकी शक्ति समाप्त हो गयी थी। यही नहीं

उनके मन में उस मंत्र के जपने की इच्छा भी मर गई थी।

इस तमाशे से उनके मन में थोड़ी उलझन भी पैदा हुई और वह इस उलझन को सुलझाने के लिए अपने सद्‌गुरु बाबा नीम करौली के पास गए। उन्हें आते हुए देखकर बाबा हँस पड़े और बोले–चल बता कैसी चल रही है तेरी साधना और कैसा है तू ? उनके पूछने से ऐसा लग रहा था, जैसे वे कुछ भी जानते न हों। हालाँकि रामदास को मालूम था कि अंतर्यामी गुरुदेव को सब कुछ ज्ञात है। फिर भी उन्होंने स्वामी जी के मंत्र की कथा, अपनी साधना और सूक्ष्म–भ्रमण के अपने अनुभव के बारे में उन्हें ब्योरेवार बताया। साथ ही यह भी बताया कि किस तरह गुरुदेव बाबा नीम करौली ने उनकी सारी शक्ति समाप्त कर दी।

रामदास के इस कथन पर बाबा बोले–बेटा ! शिष्य तो बच्चा होता है, उसकी अनेक चाहतें भी होती हैं और ये जो चाहते हैं–वह कभी ठीक होती हैं, तो कभी निरी बचकानी। गुरु को इन सब पर ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं उसका शिष्य भटक न जाए। कहीं उसे कोई नुकसान न हो। तुम्हारे साथ जो हुआ, वह तुम्हें नुकसान से बचाने के लिए हुआ। तुम्हारी साधना अभी कच्ची है। तुम्हारे सूक्ष्म शरीर में अभी पर्याप्त ऊर्जा नहीं है। ऐसी स्थिति में सूक्ष्म शरीर से भ्रमण करने पर अन्य लोकों के निवासी तुम्हें नुकसान पहुँचा सकते हैं। यहाँ तक कि तुम्हें अपने यहाँ कैदकर सकते हैं। ऐसी स्थिति आने पर तुम्हारे

सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध स्थूल शरीर से टूट जाएगा और न केवल तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी, बल्कि तुम्हारी तप–साधना भी अधूरी रह जाएगी। तुम्हारे साथ मैंने जो कुछ भी किया, वह तुम्हें इसी अप्रत्याशित स्थिति से बचाने के लिए किया। अपने सद्‌गुरु की इस कृपा को अनुभूत करके रामदास की आँखें छलक आई। सचमुच ही सद्‌गुरु के बिना और कौन सहारा है।

बाबा जी ने इनको पशिचम जगत् में अध्यात्म का प्रचार करने का निर्देश दिया जिसके लिए बाबा रामदास ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी। 'Miracle of Love' and 'Be Here Now' इनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। आपने बाबा जी के शरीर छोड़ने के उपरान्त उनके अनेक भक्तों से सम्पर्क स्थापित कर लगभग दो हजार बाबा की लीलाओं का संकलन किया व घोर परिश्रम कर सन् 1979 में यह पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक के अध्ययन से विदेशों में बाबा के भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है व अनेक विदेशी लोग कैंची धाम आकर दिव्य आध्यात्मिक वातावरण का आनन्द लेते हैं।

सन् 1978 में इन्होंने सेवा फाउन्डेशन के नाम से International Health Organization की स्थापना की जिसने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक सहारनीय प्रयास किए। इसके अतिरिक्त

इन्होंने हनुमान फाउन्डेशन के द्वारा बाबा जी की शिक्षाओं व हनुमान मन्दिरों का निर्माण कार्य किया। 84 वर्ष की आयु पार करने पर भी इनका जीवन मानव जाति के कल्याण के लिए समर्पित है। हम भारतवासियों को ऐसे सन्तों पर सदा गर्व रहेगा जिन्होंने विदेशों में जन्म लेकर विदेशी संस्कृति में पलकर भी भारतीय अध्यात्म की महत्ता से पूरे विश्व को अवगत कराया।

4. जेफ्री केगेल (कृष्णदास)

जेफ्री केगेल आध्यात्मिक नाम (कृष्णदास) 1960 के दशक के अन्तिम वर्षों में रामदास के एक शिष्य के रूप में भारत भर में भ्रमण करते रहे। अंतत: अगस्त 1970 में जाकर उनकी निर्णायक भारत यात्रा हुई, जिसमें वह रामदास के प्रिय गुरु नीम करौली बाबा के पास पहुँच गए। कृष्णदास का नाम मिलने के बाद वह भक्ति गीत गाने लगे। महाराज जी के साथ ढाई वर्ष बिताने के बाद वह अमेरिका लौट गए। लेकिन उनके अमेरिका पहुँचने के छह माह बाद ही उन्हें महाराज जी के स्वर्गवास का दु:खद समाचार मिला। वह कहते हैं कि उन्हें संगीत से सांत्वना मिलती है, भक्तियोग से वह शान्ति और शक्ति का अनुभव करते हैं।

1994 में कृष्णदास ने न्यूयार्क शहर में स्थित जीवमुक्ति योग सैंटर में अग्रणी गायन शुरु किया। योग छात्रों की संख्या लगातार

बढ़ती जा रही थी, जिससे उन्हें दुनिया भर में लोगों के साथ भजन गाने का अवसर मिला। फरवरी 2013 में कृष्णदास ने लॉस एंजिल्स, सीए में ग्रैमी पुरस्कार समारोह में प्रदर्शन किया, जिसे करोड़ों दर्शकों ने ऑनलाईन देखा। पुरस्कार विजेता फिल्म 'वन ट्रैक हार्ट: द स्टोरी ऑफ कृष्णदास' 100 से अधिक अमरीकी शहरों और दस देशों में दिखाई जा चुकी है और दुनिया भर में डीवीडी पर उपलब्ध है। अपने 14वें एल्बम–कीर्तन वाला– में कृष्णदास ने एक 'पश्चिम की ओर झुकाव' एल्बम प्रस्तुत किया है, जो गहराई तक अपनी अमेरिकी जड़ों और अपने देश से पूरी तरह जुड़ा हुआ है और फिर भी गहरे भक्तिपूर्ण भारतीय भजनों की भावना को अंगीकार करता है। उनके इस नवीनतम एल्बम का मर्म उन्हीं गीतों में है, जिन्हें वह गाते हैं। उनका एल्बम 'लाईव आनन्द' (जनवरी, 2012) सर्वश्रेष्ठ न्यू एज एल्बम श्रेणी में ग्रेमी पुरस्कार के लिए मनोनीत किया गया, जो कृष्णदास के पंसदीदा पुराने गीतों की पुरानी जीवंत स्टूडियों रिकार्डिंग है। कृष्णदास तबला, खोल, मृदंग, बास, वायलिन बांसुरी और झांझ के साथ भारत की संगीतमय और आध्यात्मिक परम्परा को पश्चिम की आवाज के साथ मिश्रित कर देते हैं और बनाते हैं, ऐसे भजन जो आनन्द और खुशी में , और हमारे सच्चे आस्तित्व में हमें ले जाते हैं।

5. जूलिया रॉबर्टस

आश्चर्य का विषय तो यह है कि अमेरिका का Hollywood भी बाबा जी के प्रभाव से अछूता न रहा। Hollywood की जानी मानी हस्ती जूलिया रॉबर्टस बाबा जी की भक्त हैं। वह स्वयं को हिन्दू कहती हैं एवं अपने तीनों बच्चों के नाम लक्ष्मी, गणेश एवं कृष्ण-बलराम रखे हैं। जूलिया रॉबर्टस का जन्म 28 Oct 1967 को अमेरिकी परिवार में हुआ व ये 1990 से लेकर सन् 2000 तक विश्व की Highest Paid Actress रही। इन्होंने अब तक अनेकों Films में कार्य किया और तीन Globe Awards एवं चार Academy Awards प्राप्त किए। सन् 2000 में इनको Erin Brokvich में सर्वोत्तम अभिनय के लिए Academy Award for Best Actress दिया गया। इसके अतिरिक्त इनका चयन पत्र-पत्रिकाओं द्वारा 50 Most Beautiful People in the World & 100 Hottest Women for All Time' के रूप में हुआ। 2010 में अमेरिका की एक प्रसिद्ध Elle Magzine में इस बात का खुलासा किया कि जूलिया Hinduism में विश्वास रखती हैं व नीम करौली बाबा की शिष्या हैं।

एक बार इन्होंने किसी स्थान पर नीम करौली बाबा का चित्र देखा इनको प्रतीत हुआ कि कोई दिव्य शक्ति इनको अपनी ओर खींच रही है व इसके बाद इनका झुकाव भारतीय संस्कृति की ओर हुआ व ये

धर्म-कर्म अध्यात्म से जुड़ती चली गई। मानव कल्याण के लिए इनका योगदान सहारनीय रहा है। UNICEF जैसी संस्थाओं के द्वारा इन्होंने गरीबी उन्मूलन के अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया। इसके अतिरिक्त अनेक अच्छी संस्थाओं के साथ जुड़कर ये पीड़ित मानवता की सेवा में लगी रहती हैं। अभी हाल ही में इन्होंने एक फिल्म Climate Change के ऊपर सन् 2014 में तैयार की है। जिससे जनता जागरूक हो व धरती पर पर्यावरण संतुलन बना रहे। इस प्रकार जूलिया रोबर्टस एक आकर्षक व्यक्तित्व की उच्चकोटि प्रतिभा सम्पन्न संवेदनशील नारी हैं जिनसे अन्य सभी महिलाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए।

6. डेनियल गोलमैन

लेखकों की दुनिया में डेनियल गोलमैन का नाम कौन नहीं जानता परन्तु यह बात बहुत ही कम लोग जानते हैं कि इन्होंने यह प्रतिभा अपने आध्यात्मिक गुरु नीम करौली के बाबा के आशीर्वाद से प्राप्त की। इन्होंने विश्व को सर्वप्रथम Emotional Intelligence का Concpet दिया। इनकी पुस्तक Emotional Intelligence: Why EQ can matter more than IQ. जो कि 1995 में लिखी गई थी अनेक वर्षों तक Newyork Times Best Seller List में रही है इससे पूर्व बड़ी-बड़ी कंपनियाँ यही समझती थी कि उन्हें अच्छे IQ वाले

Engineer and Manager चाहिएँ। परन्तु इन्होंने सर्वप्रथम यह विचारधारा रखी कि IQ के साथ-साथ EQ भी बहुत आवश्यक है। इन्होंने Emotion Competency Model दिया जो कि Goleman Model के नाम से जाना जाता है इसके अतिरिक्त इन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें जैसे Healing Emotion, Destructive Emotion, Working with Emotional Intelligence, Social Intelligence, The Brain & Emotional Intelligence, Leadership: The Power of Emotional Intelligence आदि लिखी। अध्यात्म के देश भारत में इनका आगमन उस समय हुआ जब यह Harvard University से Ph.D. कर रहे थे एवं Social Science Research Council के अनुदान पर Post Doctral करने भारत आए थे। यहाँ इन्होंने बहुत सा समय नीम करौली के बाबा के आश्रम में लगाया। इसके पश्चात् इनकी प्रसिद्धि विश्व के बड़े लेखक, Psychologist & Science Journalist के रूप में होने लगी। 7 March 1946 को कैलिफोर्निया अमेरिका में जन्मे गोलमैन आज 10 से अधिक विश्व प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक हैं और अनेक उच्च कोटि के सम्मानों से विभूषित हैं। जब यह बाबा जी के आश्रम में ध्यान साधना करते थे तो इनको बहुत प्रकार के उच्च आध्यात्मिक अनुभव हुए जिनको इन्होंने सन् 1977 में अपनी पहली पुस्तक The Meditative Mind: The Variety of Meditative Experience के

द्वारा प्रकाशित किया।

7. Larry Brilliant

लैरी Brilliant का जन्म 5 May 1944 को Michigan (U.S.) में एक अमेरिकी परिवार में हुआ था इन्होंने University of Michigan से Master in Public Health & ¡yne State University school of Medicine से MD किया। अपने जीवन में इन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर काम किया जैसे कि Google Philanthropic arm के Director रहे। 1970 में Bangladesh में आए भोला Cyclon में सहायता हेतू ये बांग्लादेश आए और यहीं से इनका भारत आगमन हुआ। भारत में यह नीम करौली बाबा के आश्रम में भारतीय संस्कृति का अध्ययन करते रहे। यहाँ बाबा जी ने इनका नाम Subramanyum रखा। हिमालय की शृंखलाओं में ध्यान करते-करते इनको अपने गुरु की आवाज सुनाई दी कि उन्हें World Health Organization को Join कर जनकल्याण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इनके गुरु की वाणी सत्य सिद्ध हुई WHO के Smallpox eradication Program में सन् 1973 से लेकर 1976 तक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और यहीं से यह विश्व विख्यात हो गए। इनकी पत्नी का नाम बाबा जी ने गिरिजा रखा जो कि Public Health Administration में Ph.D. किए थी और कन्धे से कन्धा

मिलाकर अपने पति के साथ सभी कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही। मानव कल्याण का बाबा जी का आदेश इन्होंने शिरोधार्य किया और रामदास जी की सहायता से सेवा Foundation की स्थापना की। चाहें श्रीलंका का सुनामी हो या भारत का Polio उन्मूलन कार्यक्रम सभी जगह इनका सफल नेतृत्व सहारनीय रहा। भारतवर्ष इनकी सेवाओं का सदा ऋणी रहेगा।

8. भारत रत्न वी. वी. गिरि

डॉ. वी. वी. गिरि भारत के चौथे राष्ट्रपति हुए हैं। भारत को अपनी सेवाओं के लिए इनको सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से गौरान्वित किया गया। उन दिनों ये उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे व बाबा जी के प्रति श्रद्धा व प्रेम रखते थे। एक बार जब ये उनसे मिलने गए तो बाबा जी ने इनको आशीर्वाद दिया कि वो भारत के राष्ट्रपति बनेंगे। बाबा जी का यह कथन 1969 में सत्य सिद्ध हुआ।

नृपालिमौलिव्रजरत्नकान्तिं, सरिद्विराजज्झषकन्यकाभ्याम्।
नृपत्वदाभ्यां नतलोकपंक्ते:, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥5॥
पापान्धकारार्कपरम्पराभ्यां, तापत्रयाहीन्द्रखगेश्वराभ्याम्।
जाड्यब्धिसंशोषणबड़वाभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥6॥
शमादिषट्कप्रदवैभवाभ्यां, समाधिदानव्रतदीक्षिताभ्याम्।
रमाधवांघ्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥7॥

बाबा की शिक्षाएँ

ईश्वर प्राप्ति में मोह और अभिमान को आप सब से बड़ा बाधक बताते और कहते, "**घट में जब तक मोह अभिमान, पण्डित मूर्ख एक समान।**" आप कहते, "सारा ब्रह्माण्ड हमारा घर है, इसमें रहने वाले सब हमारे परिवार के हैं। हर स्त्री माँ और बहिन है और हर पुरुष पिता और भाई। यह सब ईश्वर का परिवार है। तुम उत्कृष्ट सेवा तभी कर सकते हो, जब तुम्हारा ध्यान ईश्वर पर केन्द्रित हो। ईश्वर को किसी रूप में देखने के प्रयास से अच्छा यह है कि हर वस्तु में उसे देखा जाए।"

बाबा केवल भगवान् को ही कर्त्ता मानते थे और मनुष्य को साधारण प्राणी। वे कहते थे, "मनुष्य से क्या माँगना, वह दे क्या सकता है? सन्त और भगवान् सर्व समर्थ हैं, परन्तु उनसे माँगना नहीं पड़ता। वे सर्वज्ञ हैं, जो उचित है उसे स्वतः देते हैं।" इस प्रकार भगवत् इच्छा को वे सर्वोपरि बताते और शरणागति पर बल देते जिससे लोगों में भगवत् प्रेम और विश्वास हो और वे अकारण चिन्ताओं से मुक्त हों। स्वयं असंख्य परिवारों, दीन-दुखियों, आश्रम, भण्डारे आदि की चिन्ता वहन करते हुए भी वे कभी चिन्तित नहीं दिखाई दिए। छोटे-बड़े सभी कार्य उनकी आज्ञा से ही संचालित होते, पर उन्हें न कभी किसी से परामर्श लेने की आवश्यकता हुई और न वे आगे पीछे

का चिन्तन करते ही दिखाई दिए। वे कहते थे, "ईश्वर के भरोसे सब कार्य सहज रूप से हो जाते हैं। ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य सफल होता है। कठिन परिश्रम ही यथेष्ट नहीं होता।"

बाबा की आस्तिकता इतनी प्रबल थी कि उनके सान्निधय में आकर कोई व्यक्ति नास्तिक नहीं रह पाता था। उसकी धारणा में परिवर्तन आना स्वाभाविक हो जाता। भौतिकवादी डॉ. रिचार्ड एलपर्ट आध्यात्मवादी रामदास बन गए। यदि कोई घोर नास्तिक हठात् अपनी विचारधारा को उनके पास बैठ कर भी बनाए रखना चाहता हो तो बाबा उसकी मन:स्थिति को देख ऐसी लीला का प्रदर्शन करते जिससे प्रभावित हो वह आस्तिकता को अंगीकार करने लगता। इसी प्रयोजन से बाबा ने एक बार वृन्दावन आश्रम में हनुमान जी की मूर्ति से अश्रुपात होते दिखाया और कैंची आश्रम में हनुमान जी की मूर्ति को एक बाल्टी दूध पिलाया।

बाबा कष्टप्रद साधना को महत्त्व न देकर हृदय की शुद्धता पर जोर देते थे। सही मायने में बाबा का सत्संग उनका दर्शन और स्पर्श ही था। उनका दर्शन व्यक्ति की निजी योग्यता पर निर्भर करता था, क्योंकि वे जैसे को तैसा दिखाई देते थे। बाबा की दृष्टि आनन्दमय थी, उनकी मुद्राएँ बहुत आकर्षक होतीं और वाणी में उनके जादू था। व्यक्ति डाँट और मार खाकर भी उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था। बाबा प्रत्येक

व्यक्ति से अलग-अलग जाने को कहते और फिर प्राय: किसी दूसरे दिन आने को भी कहते। यह उनका प्रेम था जो लोगों को आकृष्ट किया करता। वे कहते भी थे, "तुम हमारे पास इसलिए आते हो कि हम तुमसे प्रेम करते हैं।" उनकी बात सही इसलिए जान पड़ती है कि गृहस्थ के माया-मोह में पड़ा व्यक्ति उनसे प्रेम करने में असमर्थ था। वह स्वार्थवश ही उनके पास जाता था, पर बाबा निस्वार्थ प्रेम करते। वे प्रत्येक व्यक्ति को प्रसाद देकर ही विदा किया करते। लोगों के आने-जाने का यह अनवरत क्रम लगा ही रहता था। उनकी आलौकिक शक्ति दर्शनार्थियों के आने-जाने की सुविधाओं का भी ध्यान रखती थी। किसी को यातायात सम्बन्धी कठिनाई नहीं होने पाती। पर्वतीय भाग में जहाँ ऐसी कठिनाईयाँ स्वाभाविक हैं, स्त्री, बाल, वृद्ध सभी हर समय उनका भरोसा कर दर्शन करने चले जाते और किसी को भी इस सम्बन्ध में निराश नहीं होना पड़ता। इतने पर भी महान् आश्चर्य की बात यह है कि बाबा के दर्शन उनकी कृपा से ही प्राप्त होते, व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से उन्हें नहीं पा सकता था।

महाराज एक खुली पुस्तक के रूप में सबके सम्मुख रहे जिसे कोई भी पढ़ सकता था, परन्तु उसे समझने की क्षमता किसी में भी नहीं दिखाई दी। वे देखने में और, वास्तव में कुछ और ही थे। मनुष्य स्वभावत: समाज में अपना परिचय अच्छा देना चाहता है, इस

कारण अपनी कमजोरियों को छिपाए रखता है। पर इसके विपरीत बाबा अपने में मानवीय दुर्बलताओं का प्रदर्शन नि:संकोच किया करते और संसार से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखते। इतने पर भी उन कार्यों का प्रभाव जन मानस में ऐसा पड़ा कि वे सदा लोगों की श्रद्धा और प्रेम के भाजन बने रहे। तर्क और गुणों के आधार पर उनके बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। यद्यपि लोक दृष्टि से आपने मान–अपमान, उचित–अनुचित, न्याय–अन्याय आदि को महत्त्व नहीं दिया, पर आपके कार्य सदा श्रेयस्कर ही रहे। वास्तव में आप गुणातीत एवं द्वन्द्वातीत थे। ऐसा जान पड़ता है कि एक महान आलौकिक शक्ति स्थूल रूप धारण कर लोगों के सामने आई जिसकी थाह मानवी बुद्धि नहीं पा सकती। आपकी विलक्षणताओं को देखकर यह कहा जा सकता है कि आपके प्रत्यक्ष और परोक्ष दो रूप रहे। दोनों रूप निरन्तर सक्रिय रहते हुए भी एक–दूसरे पर आश्रित नहीं थे। प्रत्येक स्वतन्त्र रूप से कार्य करता और अवसर पड़ने सहयोगी बन सकता। प्रत्यक्ष रूप स्थूल था और लीलात्मक, पर परोक्ष रूप विभु था – सर्वज्ञ, सर्व व्यापक और सर्व समर्थ। दोनों रूपों की एकता में आनन्द की ऐसी छाया व्याप्त रहती जिससे उनका चतुर्दिक वातावरण तदनुरूप हो जाता और वह दर्शकों को ऐसी सुखानुभूति कराता कि वे स्वयं अपने को भूल जाते।

सारांश में बाबा का जीवन भक्त हृदय को नर रूप में हरि के दर्शन कराता है। वह जिज्ञासु को मानव जीवन की कल्पनातीत सम्भावनाओं का और कर्मनिष्ठ को कार्य की वास्तविक दिशा का बोध कराता है।

"संसार में मनुष्य चाहे कितना ही ज्ञानी हो, केवल अपने दम पर अपने समस्त सांसारिक कार्यों को पूर्ण रूप से संपादित नहीं कर सकता। यदि अपवाद में ऐसा सम्भव भी हो तो वह कार्य-संपादन के अहं से नहीं बच सकता। वह अहं उसके पतन का कारण बन जाएगा।"

"ईश्वर कर्म से मुक्त है, अतः वह अपने प्रिय से प्रिय मनुष्य के लिए भी स्वयं कर्म नहीं कर सकता। यह गुरु की महिमा है कि शिष्य जो कार्य अपनी पूरी क्षमता से न पूरा कर सके,,उसे शिष्य के लिए पूर्ण करने में सहायता करे। गुरु के होते शिष्य अपनी समस्त उपलब्धियों का श्रेय पूर्ण रूप से गुरु कृपा को ही देकर, समस्त प्रकार के अहं एवं अन्य विकारों से स्वयं को अछूता रख सकता है और सब प्रकार से कल्याण को प्राप्त होता है।

स्वार्चापराणामऽखिलेष्टदाभ्यां, स्वाहासहायाक्षधुरन्धराभ्याम्।
स्वान्ताच्छभावप्रदपूजनाभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥8॥

अपनों से अपनी बात

देवात्मा हिमालय के युग परिवर्तन के महाभियान की कमान महावतार बाबा जी ने सन् 2011 से अपने हाथ में ले ली है जिससे अनेक राष्ट्रों में अनेक प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन आने प्रारम्भ हुए हैं। जैसे महाभारत के समय विनाश व सृजन दोनों घटित हुआ था उसी प्रकार यह समय भी मानव जीवन में विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि देवशक्तियों के संरक्षण व मार्गदर्शन में जीवन यापन करे। यदि किसी व्यक्ति को प्रसन्न करना हो तो उसके कार्य में हाथ बंटा दे वह प्रसन्न हो जाएगा। यही नियम यहाँ भी लागू होता है। इस महाभियान में देवासुर संग्राम में देवशक्तियों का अपनी सामर्थ्यानुसार अवश्य सहयोग करें।

भारत के महान योगियों के जीवन चरित पर प्रकाश डालने का एक प्रयास किया जा रहा है। इस हेतु 'योगी चरितामृत' के नाम से एक श्रृंखला प्रारम्भ की जा रही है। अभी जन सामान्य मात्र धन व पद की ताकत ही पहचानता है। अपनी संस्कृति कहती है 'धिक बलम् क्षत्रिय बलम्, ब्रह्म तेजो बलम् बलम्।' ब्रह्म तेज ही बलों में सर्वोपरि है। युग परिवर्तन का आधार भी ब्रह्म बल से युक्त महामानव होंगे। 'योगी चरितामृत' के अध्ययन से मानव में ब्रह्म बल का महत्त्व समझ आएगा और वह उसको पाने का पुरुषार्थ भी करेगा। इस प्रकार यह

श्रृंखला युग परिवर्तन अभियान के लिए एक मजबूत आधार तैयार करने में सहायक होगी।

यह एक ऐसा अद्भुत संकलन प्रस्तुत हो सकता है जिसकी यदि घर-घर में स्थापना अभियान चल पड़े तो घरों का भविष्य ज्ञान, भक्ति व सत्कर्म की दिव्यता से उज्ज्वल होता हुआ चला जाएगा। अभी तक हमारी नई पीढ़ी सिनेमा के चरित्रों के सम्पर्क में ही आ पाई है व स्वयं को वैसा बनाने का प्रयास कर रही है। जब उन्हें अपनी असली महान विरासत का पता चलेगा। वह महायोगियों के जीवन चरित के सम्पर्क में आएगी तो उसके भीतर निश्चित रूप से उच्च भावनाओं का उदय होगा। वो अपने आत्म गौरव को पहचान कर भारत माँ के सपूत बनने का प्रयास करेंगे व समाज को नवीन दिशाधारा देंगे। इस हेतु आप सभी से अनुरोध है कि 'योगी चरितामृत' को घर-घर पहुँचाने में सहयोग करें। जन्मदिवस, विवाह दिवस व दीपावली जैसे पर्वों पर यह पावन भेंट अपने परिजनों, शुभचिन्तकों तक पहुँचाए। जो लोग Internet का प्रयोग करते हैं वो Blogs से Soft-Copy Download कर अथवा हमसे मंगाकर अपनी मित्र मण्डली को अवश्य भेजें।

इस पुस्तकों को छपवाने के लिए हमें प्रारम्भिक अनुदान की भी आवश्यकता होती है। यदि हम किसी विषय में लिखना प्रारम्भ करते हैं तो सर्वप्रथम उससे सम्बन्धित अनेक पुस्तकों को हमें खरीदना

पड़ता है। कम्प्यूटर टाईपिंग, Editing, Setting आदि में लगभग प्रत्येक पुस्तिका पर दस हजार का खर्च आता है। यह बोझ हम अपने पाठकों पर नहीं डालते। फिर Final Soft Copy प्रिटिंग प्रेस को दी जाती है। पुस्तिका की छपाई में जितना खर्च लगता है वह पाठकों से लिया जाता है। इस पुस्तक के लिए हमें अनुदान (Donations) श्री नीरज अग्रवाल सहारनपुर, Miss कीर्ति गर्ग सुपुत्री प्रो. दीक्षित गर्ग, NIT, कुरुक्षेत्र एवं माहेश्वरी परिवार नोएडा (श्रीमती पुष्पलता जी) से मिला है। बाबा जी से इन सभी परिवारों के ऊपर दया दृष्टि रखने की प्रार्थना हम अपनी ओर से करते हैं।

यदि कोई अन्य परिजन हमारा आर्थिक अथवा लेखन, वितरण आदि में किसी प्रकार का सहयोग देना चाहे तो वह हमारे लिए बड़े हर्ष की बात होगी। हमें आशा है कि जो परिजन अपनी संस्कृति से प्यार करते हैं उन्हें हमारा यह अभियान अवश्य पसंद आएगा व किसी न किसी रूप में वो हमें अपनी शुभकामनाएँ व सहयोग देने का प्रयास करते रहेंगे। आप सभी सहयोगियों, पाठकों के उज्ज्वल व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए अपनी बात पूरी करते हैं।

कामादिसर्पव्रजगरुड़ाभ्यां, विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां दृतमोक्षदाभ्यां, नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥9॥
ॐ श्री सद्गुरु चरणकमलेभ्यो नमः। ॐ गुरुमाता चरणकमलेभ्यो नमः।

लेखक परिचय

डॉ. राजेश अग्रवाल (Ph.D., Computer Science) सन् 1990 से NIT कुरुक्षेत्र (Formally RECK) में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। सन् 1992 में युगऋषि श्रीराम 'आचार्य' जी को दीक्षा गुरु स्वीकार कर धर्म-कर्म व अध्यात्म की ओर समर्पित हुए। इस क्षेत्र में लगभग 24 वर्षों से मनन-चिन्तन व अनुसंधान रत हैं। आपका मानना है कि शीघ्र ही भारत में ऐसे 24,000 उच्च साधकों का अवतरण होने जा रहा है जो व्यक्तिवाद, परिवारवाद, जातिवाद व संस्थावाद से ऊपर उठकर लोककल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे। इनके माध्यम से 24 लाख लोगों की एक विशेष टीम तैयार होगी जो पूरी दुनिया का भविष्य देवात्मा हिमालय के आशीर्वाद से बदलकर रख देगी। इस हेतु आपका लेखन, चिन्तन एवं प्रयास सदा चलता रहता है। आपके द्वारा लिखित विभिन्न पुस्तकों से लाखों-व्यक्तियों ने 'देवात्मा हिमालय' का पावन संदेश ग्रहण किया है व जीवन में नवीन आशा, प्रकाश व ऊँचाईयों का अनुभव किया है। उनके द्वारा लिखित पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

1. स्वास्थ्य के सौ स्वर्णिम सूत्र

(100 Golden Rules for Health)

इस लघु पुस्तिका (मूल्य 10₹) में उन सभी स्वास्थ्य के नियमों का विवरण दिया गया है कि जो एक जागरूक मनुष्य के लिए जानना आवश्यक है। आज के विषम दौर में जो व्यक्ति जटिल रोगों व अस्पतालों के चक्कर से बचना चाहते हैं वे यह अनमोल पुस्तक अवश्य पढ़ें। अनेक लोगों के ऐसे अनुभव आए हैं कि इसको पढ़कर उन्हें बड़ी राहत मिली है व डॉक्टरों पर जो धन खर्च हो रहा था वह परिवार के विकास में लग रहा है।

2. साधना समर - चुनौतियाँ एवं समाधान

A Guide to Spiritual Transformation

जो व्यक्ति आध्यात्मिक साधनाओं में रूचि रखते हैं व उसमें सफल होना चाहते हैं। उनके लिए यह ग्रन्थ (मूल्य 100₹, पृष्ठ 550) एक संजीवनी बूटी के समान है जिसको पाकर मृत प्राय: साधना जीवन्त होने लगती हैं। अनेक साधकों ने इसको पढ़कर आध्यात्मिक रूपान्तरण की दिशा में तीव्रता व भाव समाधि का अनुभव किया है। पुस्तक को पढ़ते समय कुछ लोगों को यह अनुभव भी हुआ है जैसे हिमालय के महायोगियों का संरक्षण मार्गदर्शन उनको साक्षात् मिल रहा है।

3. सनातन धर्म का प्रसाद

यह पुस्तक (मूल्य 50₹)जन सामान्य के लिए लिखी गई है। इसमें जीवन जीने की कला का विवरण है तथा यह अपनी धर्म संस्कृति व अध्यात्म का बोध कराती है। पुस्तक पढ़कर पाठकों में नवीन उत्साह व शक्ति का संचार होता है व जीवन लक्ष्य का बोध होता है।

4. युगऋषि श्रीराम जी का जीवन संघर्ष और हमारी भूमिका

युग परिवर्तन में सक्रिय परिजनों से आचार्य जी ने क्या आशा अपेक्षा की थी तथा युग निर्माण योजना में कैसे तेजी लाई जा सकती है इस प्रकार का सुन्दर विवरण पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। पुस्तक का मूल्य 40₹ है।

5. पुराण पुरुष लाहिड़ी महाशय

क्रिया योग के माध्यम से ईश्वर साक्षात्कार का ज्ञान महावतार बाबा जी ने लाहिड़ी महाशय को दिया। मृतकों में जीवन फूँकने वाले, जीवन में सामान्य गृहस्थ की तरह रहने वाले इन योगीपुरुष का बड़ा ही सुन्दर व रोचक जीवन दर्शन इस लघु पुस्तिका (मूल्य 10₹) में दिया गया है।

References

1. आलौकिक यथार्थ
2. स्मृति सुधा
3. Miracle of Love
4. Be Here Now
5. Wikipedia

योगी चरितामृत शृंखला में आने वाली पुस्तकें

1. नीम करौली के बाबा (तकदीर बदलने वाले बाबा)
2. पुराण पुरुष लाहिड़ी महाशय (क्रिया योग के सूत्राधार)
3. योगीराज तैलंग स्वामी (Walking Shiva of Kashi)
4. युगऋषि श्रीराम 'आचार्य' जी
5. श्री अरविन्द
6. महर्षि रमण
7. स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस

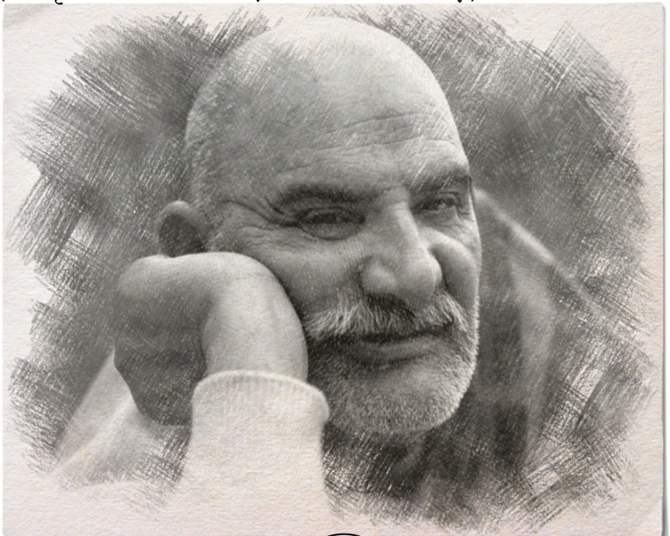
नजरदोष

एक बार की बात है कि एक राजा के पेट में दर्द रहने लगा। राजा ने बहुत प्रकार के उपचार किए, थोड़ा बहुत आराम मिलता परन्तु दर्द का पूर्ण निवारण न हो सका। राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति दर्द का उपचार कर देगा उसको मुँह माँगा इनाम दिया जाएगा। कुछ समय बाद एक साधु राजा के पास आया व राजा के दर्द का उपचार खोजने लगा। साधु ने कहा कि वह उसके साथ भोजन करेगा। साधु उच्च कोटि का साधक था। राजा के साथ भोजन करके वह उसके दर्द का कारण समझ गया। जब वह भोजन बनाने वालों से मिला तो पूर्ण विश्वास हो गया कि गड़बड़ कहाँ है। उसने एक थाल भोजन मँगवाया व उसे कपड़े से ढका। जब कपड़ा उतारा तो वहाँ भोजन की जगह काँटे व बिच्छू मिले।

साधु ने राजा को कहा कि जो व्यक्ति भोजन पका रहे हैं उनकी नजर व नीयत ठीक नहीं है। आपके बढ़िया भोजन के लिए वो सदा ललायित रहते हैं। आप ऐसा करें कि ब्राह्मणों की महिलाओं से भोजन बनवाएँ व पहले भोजन उन ब्राह्मण परिवारों को कराएँ फिर स्वयं करें। यह परिवर्तन करते ही 40 दिन के भीतर पेट दर्द जाता रहा। साधु ने राजा ने माँगा कि उसके राज्य में साधु-ब्राह्मणों का उचित सम्मान हो व उनके भोजन आवास व अन्य आवश्यकताओं की उचित पूर्ति हो

जिससे राज्य में ज्ञान व सात्विक प्रवृत्तियाँ फलती–फूलती रहें।

यह कहानी दर्शाती है कि मानव जीवन में समस्याओं के पीछे कुछ सूक्ष्म कारण होते हैं। जब तक उनका निवारण नहीं होता तब तक समस्याओं की जड़ें नहीं कट पाती। इसके लिए उचित ज्ञान वाले आचार्यों व साधकों के मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति आध्यात्म के पथ पर चलते हैं उनका तन्त्र संवेदनशील होने लगता है इस कारण उनके लिए उचित मार्गदर्शन व संरक्षण अनिवार्य होता है। (विस्तृत जानकारी के लिए '**साधना–समर**' पढ़ें)



भाव नयन से नीर कठौता
भर के लाया हूँ गुरुवर।
करलूँ आपके पद प्रक्षालन
अनुमति दो मुझको प्रभुवर॥



श्री कैंची धाम, नैनीताल